ज्ञानामृत

जनवरी, 1986
वर्ष 21 ❋ अंक 7

मूल्य 1.50

परमपिता शिव परमात्मा

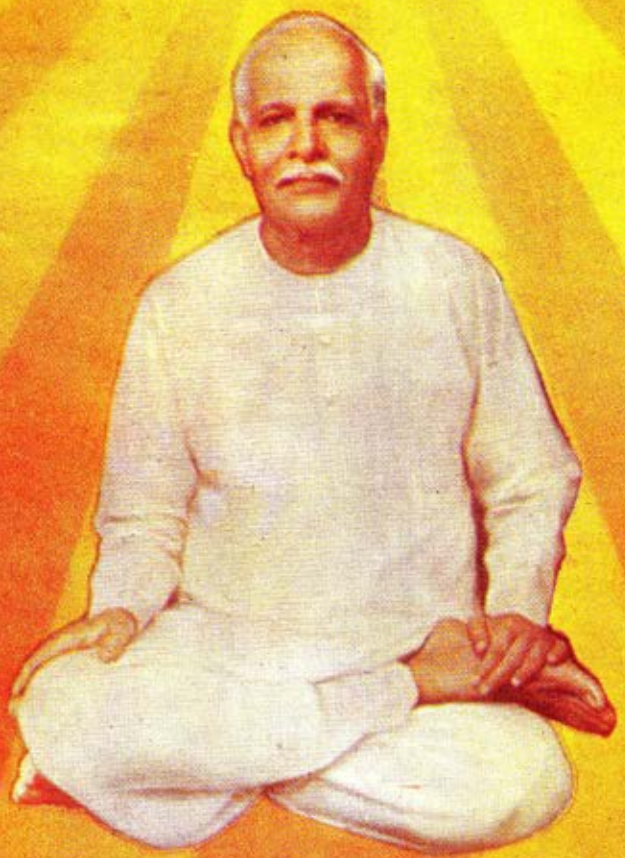

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा

स्मृति दिवस विशेषांक

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी के इन्दौर आगमन पर ब्र. कु. विमला राष्ट्रपति जी को इन्दौर स्थित ओमशान्ति भवन में होने वाली गतिविधियों से अवगत कराते हुए।

चण्डीगढ़ में ब्र. कु. योगिनी भ्राता अर्जुनसिंह, पंजाब के पूर्व राज्यपाल जी को म्यूजियम आफ़ विज़डम" में चित्रों की व्याख्या करते हुए।

साउथ दिल्ली संग्राहालय में ब्र. कु. संगीता जाम्बिया के हाई कमिश्नर को चित्रों का अवलोकन कराते हुए।

यादगिरी में हुए "सरवाइवल आफ़ हयुमैनिटी थ्रू रिलीजन" सेमीनार में सम्बोधन करती हुई ब्र. कु. विजय।

सांगली सेवा केन्द्र द्वारा विटा शहर में निकाली गई शान्ति यात्रा का दृश्य।

गाजियाबाद में हुए आध्यात्मिक समारोह में अपने उद्गार प्रकट करते हुए भ्राता नसीम जैदी, डी. एम. गाजियाबाद।

जालन्धर में आयोजित प्रतियोगिता में विजेता टीम को जालन्धर डिविजन के कमिश्नर भ्राता दिनेश चन्द्र जी ट्राफ़ी देते हुए।

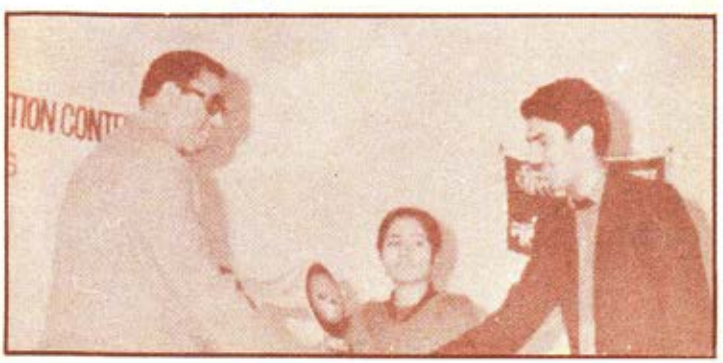

Regd No. 10563/65-D(E)-70

उदयपुर में राष्ट्रपति महोदय ज्ञानी जैलसिंह जो को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. शील बहन ।

साकेत-नई दिल्ली में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन पश्चात् ब्र. कु. शान्ति भ्राता वासुदेव पानीकर, संसद सदस्य को स्वर्ग की झांकी की व्याख्या करते हुए ।

लारेन्स रोड़-दिल्ली में नए सेवा केन्द्र का उद्घाटन करती हुई ब्र. कु. हृदयमोहिनी जी तथा पार्षद श्याम लाल गर्ग जी । दाएं चित्र में भ्राता दीपचन्द बन्धु दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए ।

काठमाण्डू में विश्व शान्ति भवन में आध्यात्मिक समारोह में प्रवचन करती हुई एम. पी. श्रीमति कल्पना बहिन ।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ	क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	नव वर्ष के लिये मुख्य धारणाएँ	१	९.	मनुष्य की कीमत	१९
२.	ऐसे थे हमारे ब्रह्मा बाबा (सम्पादकीय)	२	१०.	अनुकरण ब्रह्मा बाबा का	२१
३.	आँखों देखा विचित्र अनुभव	६	११.	१८ जनवरी (कविता)	२३
४.	लो फिर आ गया नव वर्ष (कविता)	१०	१२.	गुणमूर्त बाबा ने हमें गुणवान बनाया	२४
५.	स्मृति दिवस—न्यारे व प्यारे बनने का प्रेरक	११	१३.	बाबा ने मुझे शान्तमूर्त तथा सरलता की मूर्ति बना दिया	२६
६.	अश्रु नहीं बहाए जाते हैं (कविता)	१४	१४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९
७.	सत्य को बताने वाला कौन ?	१५	१५.	अनुभव होता·····	३२
८.	सचित्र सेवा समाचार	१७			

नव वर्ष के लिये मुख्य धारणाएं

—अव्यक्त बापदादा

o जो बात बीत चुकी उसका चिन्तन न कर, बीती हुई बातों से शिक्षा लेकर आगे के लिए सावधान रहना है।

o अपनी सभी चिन्तायें बाप पर अर्पण करके बेगमपुर की बादशाही का अनुभव करना है।

o बाहरमुखता से बचने के लिए एकान्त के आनन्द की अनुभूति करो।

o कर्मों में सुस्ती व अलबेलेपन का त्याग कर योगयुक्त कर्म करने हैं।

o इस शरीर में निमित्त मात्र और सर्विस में निमित्त समझना है तब नम्रता आयेगी।

o स्तुति के आधार पर अपनी स्थिति नहीं बनानी है। अपने मान का भी त्याग कर निर्माण बनना है।

o सब का स्नेही बनने के लिए छोटों को प्यार और बड़ों को रिगार्ड देना है।

o अपनी कमजोरियों के चिन्तन के बजाए सदा अपनी श्रेष्ठ तकदीर के नशे में रहो तो कमजोरियां स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी।

o रूहानियत में रहने के लिए तन-मन-धन का वा जो कुछ भी है उसे अमानत समझना है। अमानत में ख्यानत न हो।

o अपनी नेचर को बदलकर अव्यक्ति फीचर्स बनाने हैं। अपनी नेचर आप समान बनानी है।

o अपने संकल्पों को कन्ट्रोल करने की ब्रेक पावरफुल बनानी है। जब स्वयं पर कन्ट्रोल होगा तब अपने को वा दूसरों को सहज परख सकेंगे।

o सन्तुष्टता ही महानता है। न डिस्टर्ब होना है, न डिस्टर्ब करना है।

o अपनी विशेषताओं को प्रभू देन समझ सर्व को प्रभू प्रसाद देना है। एक बाप की तरफ इशारा दे एकरस बनाना है।

o पुरानी स्मृतियों का, पुराने स्वभाव संस्कार का अन्तिम संस्कार करना है।

o बुद्धि रूपी पांव फर्श के बजाए फरिश्तों की दुनिया में रखने है। (शेष पृष्ठ ३२ पर)

नव वर्ष आप सबको मंगलमय हो

सम्पादकीय

ऐसे थे हमारे ब्रह्मा बाबा

ब्रह्मा बाबा, जिनके अव्यक्त आरोहण को १८ जनवरी १९८६ की रात्रि के लगभग ९.०० बजे १७ वर्ष पूरे हो जायेंगे, का साकार जीवन भी अद्वितीय विशेषताओं से भरा हुआ था। निस्सन्देह, ईश्वरीय ज्ञान तो उनके मुखारविन्द से शिव बाबा ने दिया परन्तु उस ज्ञान का प्रेक्टीकल स्वरूप बनकर, उसको जीवन के साँचे में ढालकर, उसका सार, विस्तार और व्यवहार का रूप देकर ब्रह्मा बाबा ने ही हमारे सम्मुख रखा। वे ज्ञान के केवल एक प्रवक्ता ही नहीं थे बल्कि जैसे मिश्री मिठास-स्वरूप होती है वैसे ही वे भी ज्ञान-स्वरूप थे। वे योग के कोई प्रचारक नहीं थे बल्कि योगी जीवन के एक साक्षात उदाहरण थे। 'योगी जीवन कैसा होना चाहिए?'—वे केवल इसकी व्याख्या नहीं करते थे बल्कि अपने जीवन को योगमय बना दूसरों को भी योग की मस्ती में मग्न करने वाले थे। वे केवल दिव्य गुणों की धारणा की आवश्यकता पर बल ही नहीं देते बल्कि उनका जीवन दिव्य गुणों का एक ताजा गुलदस्ता था। 'मनुष्य को अपना तन, मन, धन सेवा में लगाना चाहिए'—वह केवल ऐसा कहा नहीं करते थे बल्कि उन्होंने इसे करके दिखाया। उनका हर संकल्प सेवामय था और अन्तिम श्वास तक उन्होंने सेवा ही की और वह भी ऐसी कि जैसी कोई कर नहीं सकता।

शिव बाबा ने तो मनुष्यात्माओं को नये विश्व के निर्माण के लिए नया ज्ञान अथवा नया जीवन-दर्शन दिया परन्तु जन्म-जन्मान्तर से भूली-भटकी और दुर्बल हुई आत्माओं को उस ज्ञानामृत रस से सींचने का कर्त्तव्य ब्रह्मा बाबा ने अथक और अदम्य रूप से किया और ऐसी तरह किया कि जैसा अन्य कोई नहीं कर सकता। शिव बाबा ने यह समझाया कि पवित्रता ही आत्मा का स्वधर्म है और कि कितने भी सितम ढाये जायें परन्तु इस स्वधर्म को न छोड़ना परन्तु इस पवित्रता रूपी महाव्रत में आत्माओं को कायम-दायम (स्थाई रूप से स्थित) करने का एक अति महान कर्त्तव्य ब्रह्मा बाबा ने ही निभाया। आज के दूषित कलयुगी वातावरण में जब कि सभी धर्म और सभी ग्रन्थ यह कहते हैं कि स्त्री-पुरुष में वासना भोग का सम्बन्ध स्वाभाविक है, आदिकाल से चला आया है और ईश्वर-सम्मत है और राम एवं कृष्ण की भी मर्यादा के अनुकूल है, उस वातावरण में नव-विवाहित पति-पत्नि के बीच भी धर्म और आने वाले नवयुग की मर्यादा को स्थापन करना एक ऐसा कठिन मामला था जिसे ब्रह्मा बाबा ही ने हल किया। ऐसी स्थिति में जब वर और वधु के माता-पिता, सास-श्वसुर और भाई-बान्धव सब उनको पुरानी परिपाटी की पट्टी पढ़ाते तब बाबा ही की यह कमाल थी कि वे उन्हें काम-ज्वर से पीड़ित न होने देते। वे गृहस्थ की नाव में बैठी उन आत्माओं को योग का ऐसा चप्पु हाथ में दे देते कि उनकी नाव आगे सुरक्षित रूप से बढ़ती जाती। वे उन्हें ऐसा और इतना प्यार दे देते कि उन्हें प्यार का अभाव कभी भी महसूस न होता और दैहिक प्यार एक-दूसरे की ओर न खींचता। वे उन्हें ऐसे नशे का प्याला पिला देते कि जिससे उन्हें जवानी का नशा न चढ़कर रूहानी नशा चढ़ जाता। वे उन्हें लोक-कल्याण अथवा जन-सेवा के कार्य में ऐसा व्यस्त कर देते कि उनकी गृहस्थ भावना सेवा-कामना में परिवर्तित हो जाती। इसका फल यह निकलता कि लोग जिस कार्य को असम्भव मानते चले आये हैं, वह ब्रह्मा बाबा की प्यार-पुचकार से, उनके पत्राचार से, उनकी प्रेरणा और उपहार से सम्भव सिद्ध हो जाता।

मुझे याद है कि आज से २५ वर्ष पहले एक कन्या और एक युवक का सम्बन्ध, जब दोनों के माता-पिता के आग्रह के परिणामस्वरूप,

गृहस्थ-मर्यादा में जोड़ा जाने वाला था तो बाबा ने उन्हें यह पत्र लिखकर भेजा कि वे ऐसा पवित्र दाम्पत्य (युगल) जीवन जीकर दिखायेंगे कि जिसके आगे संन्यासी भी झुक जायेंगे। इस पत्र से उन्हें ऐसी प्रबल प्रेरणा मिली, पवित्रता में ऐसा उनका मन जमा कि उन्होंने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। केवल एक पत्र ही से नहीं, बाबा ने जो वर्षों तक उन्हें निरन्तर प्यार दिया, उन्हें सेवा का उपहार दिया, वह अन्य कोई नहीं दे सकता। उनकी तथा उन जैसे अनेकों युगलों की जिम्मेवारी लेकर कदम-कदम पर उन्हे मार्ग-प्रदर्शना देना, उनका उत्साह बनाये रखना, उन्हें मंजिल की ओर आगे बढ़ाते चलना, उन्हें अनेक प्रकार के आँधी-तूफानों से पार करना, उनके जीवन को नीरस न होने देना, उन्हें एक ऐसा लक्ष्य देना कि जिसमें वे निरन्तर लगे रहें और उनके कुल जीवन को योग के साँचे में ढाल देना, यह कोई आसान काम नहीं है। ऐसे सैंकड़ों और हज़ारों विवाहित, अविवाहित और नवविवाहित लोगों को पवित्रता के पद पर आसीन करके उन्हें लौकिक से अलौकिक बना देना एक ऐसी मेहनत का काम है कि जिसे न अन्य कोई कर सकता है और न ही कोई अपने सिर पर लेगा। एक-एक वत्स पर ब्रह्मा बाबा ने जितनी मेहनत की, जितना ध्यान दिया, जितना प्यार बरसाया और अपना जितना तन, मन, धन जुटाया, वह संसार के इतिहास में न आज तक किसी ने किया है और न कोई कर सकता है। जिन्होंने उनके इस करिश्मे को देखा है, जिनका अपना जीवन उस प्यार से सींचा गया है, केवल वे ही इस सौभाग्य की साक्षी दे सकते हैं। अन्य जो आज थोड़े समय के लिए सम्मेलनों और उत्सवों में उन वत्सों के सम्पर्क में आते हैं, जिनमें बाबा ने ज्ञान-योग-धारणा-सेवा त्याग रूपी पंचामृत भर दिया है, वे उन वत्सों के ज्ञान या प्रेम या धारणा या सेवा आदि से प्रभावित तो होते हैं परन्तु शायद वे इसका अन्दाजा नहीं लगा सकते कि ब्रह्मा बाबा ने ६३ जन्मों से थकी-मांदी और गुमराह हुई आत्माओं को कैसे राह पर लगाकर, उनके विकारों की तपत बुझाकर उन्हें नई दुनिया के नमूने बनाने की अवर्णनीय मेहनत की होगी।

हम ऊपर यह कह रहे थे कि बाबा का जीवन नई ईश्वरीय रचना का नमूना था और सतोगुण की चेतन मूर्ति था तथा योगी जीवन का एक अनुकरणीय आदर्श था। जिन नेत्रों ने साकार रूप में बाबा को निहारा है, जिन वत्सों को जीवन के कुछ दिन भी उस अनुपम पितृवत् आत्मा के साथ रहने का अत्यन्त अनमोल और दुर्लभ सौभाग्य मिला है, उनके लिए बाबा की वह छवि अविस्मरणीय है। अभी देखो तो बाबा ज्ञान की गहराइयों में मन को ऐसा मग्न करा रहे हैं कि अरस्तु (Aristotle) और सुकरात (Socrates) जैसे दार्शनिक, न्यूटन और आइनस्टाइन जैसे वैज्ञानिक तथा कपिल और गौतम अथवा व्यास और कणाद जैसे ऋषि-मुनियों को भी मात है परन्तु थोड़े ही क्षण बाद वे सेवा के कार्यों में भी ऐसा ही तत्पर करा रहे हैं कि कर्मठ किसान, कुम्हार, लुहार और सुनार को भी मात है क्योंकि इसमें भी चित्त को लगाकर पूरी तत्परता, दक्षता और क्षमता से कार्य को सफलता तक पहुँचाने की बात वे सिखा रहे हैं। अभी देखो कि वे योग की पराकाष्ठा पर ले जाकर जीवन को आनन्द-विभोर कर रहे हैं और फिर इसके बाद वे पहाड़ियों की चोटियों पर ले जाकर कुछ रमत-गमत (हास्य-विनोद) और अल्पाहार तथा मनोरंजन के भी ज्ञान-युक्त कार्यक्रम करा रहे हैं गोया आत्मा और शरीर, दोनों ही को स्वस्थ बनाए रखने के कार्य साथ-साथ चल रहे हैं। राजयोग और कर्मयोग का भी सन्तुलन बना हुआ है। विद्याध्ययन और खेल-कूद दोनों अपने-अपने समय पर किये जा रहे हैं। जीवन में सादगी और त्याग भी बना हुआ है परन्तु स्वच्छता, सभ्यता और उच्चता की झलक भी कम नहीं हुई। नम्रता और आत्म गौरव दोनों का समन्वय बना हुआ है। मैं क्या कहूं? यह कि बाबा एक महाज्ञानी थे—ऐसा कहना तो गोया उनके जीवन को एकांगी कहना

होगा। वे जितने ज्ञानी थे, उतने योगी भी थे, उतने सेवा प्रवृत्त भी और दिव्य गुण सम्पन्न भी। उनके जीवन में ज्ञान, योग और दिव्य गुण आदि ऐसे अलग-अलग नहीं थे कि जैसे किसी मकान के अलग-अलग कमरे, अलमारी के खाने या स्कूल में पढ़ाई के अलग-अलग घण्टे (पीरियड) होते हैं बल्कि जिस समय वे ज्ञान का रमण करते, वे योग में भी स्थित होते और जिस समय वे सेवा कर रहे होते, उस समय भी वे योग से अलग नहीं होते। बल्कि ज्ञान, योग, धारणा और सेवा सब एक-साथ ही और अविभिन्न तथा अविभाज्य रूप से ही उनका स्वाभाविक जीवन बन गए थे। बात अलग और ज्ञान अलग—ऐसा नहीं था बल्कि उनकी हर बात में ज्ञान समाया हुआ होता और वे ज्ञान को बात-बात में ही दे देते। योग और कर्म, दो अलग पुरुषार्थ नहीं थे बल्कि दोनों का ताना-बाना सा हुआ होता। इस दृष्टिकोण से वे एक नमूना थे जिनके सम्पर्क में आने से शिव बाबा की सूक्ष्म बातें आजकल का मनुष्य व्यावहारिक रूप से समझ पाता। दूसरे शब्दों में उनका जीवन और व्यवहार शिव बाबा द्वारा दिये हुए ज्ञान और योग आदि का एक निरन्तर प्रेक्टीकल डिमोन्स्ट्रेशन था अर्थात् आँखों से देखा जाने वाला आचरणात्मक प्रदर्शन था। उनका कर्म और उनकी काया ब्रह्मा नाम वाली आत्मा का तो साकार रूप थी ही परन्तु साथ-साथ वह शिव बाबा की शिक्षाओं और बताई गई धारणाओं का भी साकार रूप थी—और वह भी ऐसे कि अब शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा में भेद भी विलीन होता जा रहा था गोया ब्रह्मा बाबा को देखने, समझने और अनुभव करने से अव्यक्त शिव बाबा को अनुभव करना आत्माओं के लिए सहज और सुलभ साधन था। दूसरे शब्दों में यों कहें कि ब्रह्मा बाबा में शिव बाबा ही की झलक थी अथवा उनका जीवन शिव बाबा का ही दर्पण था। किसी ने यह जो कहा है कि

"दिल के आइना में है तस्वीर-ए-यार
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली"

इसको बदलकर ब्रह्मा बाबा के प्रसंग में यों कहना ठीक होगा।

"ब्रह्मा के कर्म में है तस्वीर-ए-यार
जब जरा गर्दन उठाई देख ली"

ब्रह्मा बाबा की एक विशेषता यह थी कि वे जिस बात को एक बार ठीक मानते, वह केवल मान्यता तक ही न रह जाती बल्कि वे उसे आचरण में उतारते। जिस बात को वे ठीक न समझते, उसे वे सहज ही और झटपट ही स्थाई रूप से छोड़ देते। अपने रूहानी पुरुषार्थ में सबसे आगे जाने में उनकी यह विशेषता विशेष रूप से साधन बनी। वे पहले अद्वैत वेदान्त को पढ़ते और सुनते रहते थे परन्तु अब जब शिव बाबा से वास्तविक ज्ञान मिलने लगा तो असत्य को छोड़ सत्य को अपनाने का कार्य उन्हें कोई विशेष विकट नहीं लगा। इसी प्रकार वैभवों, व्यापार और धन-दौलत के जीवन को तिलांञ्जली देकर त्याग, तपस्या और सादगी के जीवन को अपनाने के लिए भी उन्हें कोई मानसिक संघर्ष नहीं करना पड़ा। ऐसे ही गृहस्थ जीवन को पलटकर न्यारा और सबका प्यारा बनने तथा भोगी भक्त के जैसे जीवन से योगी जीवन बनाने में भी उन्होंने शिव बाबा से कोई ज्यादा मेहनत नहीं ली न ही इसमें उनका कोई अधिक समय लगा। शिव बाबा ने जो कलियुगी रस्म रिवाज़ या मत मर्यादा छोड़ने तथा जो सतयुगी अथवा दैवी कला-कौशल अपनाने के लिए कहा, वह उन्होंने कठिन या असम्भव न मानकर और उसमें कष्ट या क्लेश न अनुभव करके उसी घड़ी इसे पालन करना शुरू कर दिया। भक्ति-मार्ग में काफी काल बिताते हुए वे भी परमात्मा को सर्वव्यापी मानते, मनुष्य के पुनर्जन्म को ८४ लाख योनि में होने की बात को ठीक समझते और कई आताल-पाताल तथा लम्बे-लम्बे युगों की बातें सुनते सुनाते रहते और विशेष बात यह कि मूर्ति पूजा में वे भी पक्के थे परन्तु जब उन्होंने यह सब छोड़ने का संकल्प किया तो वे झट से ही इससे हट गए और स्थल से सूक्ष्म की ओर बढ़ गए।

विशेष बात यह कि बाबा ने जो पितृवत, मातृवत, मित्रवत, सखा समान जो स्नेह और प्यार दिया, उसका अपना ही एक स्थान और महत्त्व है। लौकिक सम्बन्धों से बुद्धि निकाल कर अलौकिक सम्बन्ध जोड़ने के पुरुषार्थ में वे अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए। बाबा के इस प्रेक्टीकल पार्ट का उतना ही महत्व है जितना कि ज्ञान, योग, धारणा इत्यादि से सम्बन्धित ईश्वरीय महावाक्यों का। साकार बाबा के माध्यम से तथा स्वयं साकार बाबा के अपने जीवन से वह प्यार न मिलता तो बेड़ा पार होना भी कठिन था। अब वह उतना कठिन नहीं है जितना उस समय था क्योंकि तब न तो मार्ग इतना प्रशस्त था न ज्ञान इतना स्पष्ट। न योगाभ्यास इतना उच्च था न लक्ष्य इतना प्रत्यक्ष। तब मित्रों-सम्बन्धियों और संसार भर की कटु आलोचना और पुराने मत-मतान्तरों का प्रबल प्रभाव और मोह-ममता का कड़ा जकड़ाव, पिता-पुत्र और पति-पत्नि के बीच का जमा-जुटा हुआ स्नेह-सम्बन्ध—इन सबसे सामना करते हुए आत्मा को परमात्मा की ओर ले जाने के लिए बाबा के इस अलौकिक स्नेह और सम्बन्ध का पार्ट एक अद्वितीय स्थान रखता है।

उन प्रारम्भिक दिनों में विभिन्न स्थानों, कुटुम्बों और संस्कारों वाली आत्माएं जब आकर इकट्ठी रहीं, तो बाबा ने एक स्नेह-केन्द्र का पार्ट निभाते हुए सबको मिलाने और संगठन में सहन करने, सुनियोजन (adjust) करने तथा एक नये अलौकिक परिवार के रूप में स्वयं को ढालने की आवश्यक कलाएं सिखाईं। "विश्व एक परिवार है और परमात्मा उसका पिता है तथा हम सब उसकी सन्तान"—इस मान्यता की क्रियान्विति के लिए पहले इस छोटे परिवार के सदस्य के रूप में एक-दूसरे से ताल से ताल मिलाकर और मन की रास रमाकर चलना ज़रूरी था और इस सब की प्रेक्टीकल शिक्षा देने के लिए आदर्श रूप में निमित्त बने स्वयं साकार बाबा। उन्होंने कितने बच्चों के कड़े संस्कारों को सहा परन्तु फिर भी उनसे घृणा न करके उनको प्यार दिया। अमीर और गरीब का भेद न करके सबको मिलाया। ऊंचे कुल या अन्य कुल के सदस्यों को एक-साथ एक-जैसा जीवन व्यतीत करना सिखाया। जब एक ऐसे अलौकिक परिवार का लघु रूप (Small nucleus) बन गया, तब एक नये वसुधैव कुटुम्बकं का विस्तृत रूप बनाने की प्रक्रिया शुरू हो गई। ऐसे थे हमारे और सबके प्यारे बाबा जिन्होंने ऐसा कार्य किया जो आज तक कोई भी न कर सका।

—जगदीश

'चित्रकूट धाम' कब्री में हुए मानस सम्मेलन के अवसर पर रामचरित मानस की मर्यादाओं पर प्रवचन करती हुई ब्र० कु० रेशम बहन।

आंखों देखा विचित्र अनुभव

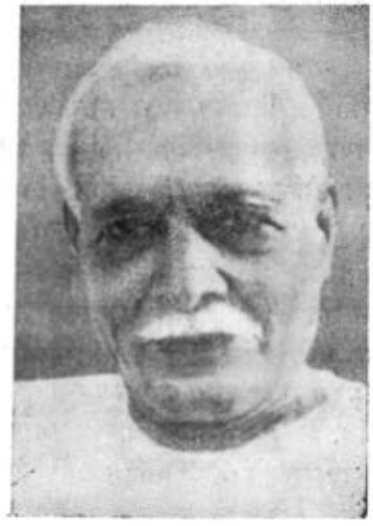

ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता

ब्रह्मा बाबा

वैसे तो संसार में जितने भी मानव तनधारी हैं, उनके अपने-अपने माता-पिता, भाई-बहन होते हैं। ऐसे ही मेरा भी जन्म एक साधारण मनुष्य के घर में हुआ। पिताजी का नाम दादा लेखराज था। प्यार से सभी लखीबाबू के नाम से पुकारते थे। कलकत्ता में न्यू मार्केट के सामने ७/१/C लिण्डसे स्ट्रीट में निवास स्थान तथा हीरे जवाहारात का व्यापार था। उनका लौकिक जीवन इतना सरल और प्रभावशाली था जिसको आज के युग में वर्णन करने से आश्चर्य लगता है। तथा फिर १९३६ से परमपिता शिव परमात्मा की प्रवेशता और साक्षात्कार के बाद तो एकाएक कैसे विश्वपिता ब्रह्मा के रूप में बदल गया। अतः ज्ञान के पहिले और बाद के जीवन की कुछ घटनाओं का आंखों देखा हाल, अनुभव, शिक्षा, प्रेरणायें व आश्चर्यजनक बातें आपके सामने रखती हूँ। जिसको सत्य समझकर धारण करने पर आप भी उस पिता के समान बन सकते हैं। अर्थात् घर-गृहस्थ में रहते हुए सच्चे कर्मयोगी वा राजयोगी बन सकते हैं।

ज्ञान के पहिले घर का वातावरण व दैनिक दिनचर्या

भगवान के प्रति भावना

हमने शुरू से देखा कि घर का लौकिक वातावरण एक मंदिर के समान था। कारण घर में ही एक छोटा-सा मंदिर तथा उसमें पूजा, पाठ, माला, भजन, कीर्तन, गुरुओं का आना, आरती आदि-आदि का कार्यक्रम प्रतिदिन चलता रहता था। परिवार के प्रत्येक सदस्य के अपने-अपने भगवान थे। प्रतिदिन बाबा गीता का पाठ व नारायण यानि विष्णु की पूजा करते थे।

अतः बिना स्नान व पूजा पाठ के किसी को भी खाने व पीने का नियम नहीं था। अगर स्कूल भी जाना है तो बिना पूजा के दूध भी नहीं मिलेगा, भले स्कूल में देरी क्यों नहीं हो। अर्थात् इस प्रकार से भगवान के प्रति भावना बैठाना, जल्दी उठाना, स्नान करना, सफाई आदि की आदत बच्चों में बचपन से डाली जाती थी।

दान देने से भाग्य बनाने की आदत

हमने देखा बाबा शुरू से दान खुद तो देते ही थे, साथ-साथ परिवार के सभी छोटे बड़ों से भी दान करवाते थे। तथा दान करने से राजा-महाराजा बनेगी—ऐसे भी कहते थे।

एक दिन की बात है—संक्रान्ति का दिन था। उस दिन विशेष कई प्रकार का दान दिया जाता है। जिसमें सोने, चाँदी, ताम्बे, अन्न, वस्त्र, काले-सफेद तिल आदि के दान का महत्व होता है। जो

पंडित दान लेने आता था, वह बाबा को यह बताता था कि सोने के दान से महाराजा बनेंगे, चाँदी के दान से राजा, ताम्बे के दान से ये, कपड़ों के दान से ये बनेंगे, यह फल मिलेगा। इस प्रकार की बातें जब पंडित जी सुना रहे थे—तो मैं भी सुन रही थी। उस समय मेरी उम्र करीब ५-६ वर्ष की होगी तथा बुद्धि में यह था कि सोने का दान करने से राज्यपद मिलेगा। अगले जन्म में राजा बनेगी। तो यह बात सोना दान करने की मन में पक्की हो गई तथा मैंने पंडित जी को कहा मैं भी सोना दान करूँगी। तो पंडित बोला—तुम कुंवारी कन्या हो, तुमको तो दान मिलेगा, यह तो सिर्फ गृहस्थियों को करना होता है। मतलब उसने लेने से इन्कार कर दिया। तथा मुझे लगा कि काल अगर मैं मर जाऊं तो राजा नहीं बनूंगी और बाबा तो राजा बन जायेंगे।

तो जैसे ही पंडित जी अम्मा बाबा से सोना-चाँदी दान लेकर जाने लगे तो मैं भी उसके पीछे पीछे चली गई तथा रास्ते में अपने हाथ में जो सोने की चूड़ियाँ पड़ी थीं, उसको खोलकर पंडित जी को देना चाहा, मगर वो ले नहीं। कहने लगा तुम तो बिना दिये ही राजा बन जाओगी। मैंने कहा आपको लेना ही पड़ेगा, मैं वापिस नहीं लूंगी। तो मेरे जिद्द के कारण वो डर से चूड़ियाँ लेकर बाबा के पास पहुँचा और कहने लगा—"बाबू जी, बच्ची ने ये सोने की चूड़ियाँ दी हैं तथा कहा है मेरी अम्मा, बाबा तो राजा बनेंगे तथा मैं तो रह जाऊँगी, इसलिए तुम मेरा सोना ले जाओ तो मैं भी राजा बनूंगी। लेकिन बाबूजी कन्या का तो मैं कुछ ले नहीं सकता।"

इस बात को सुनकर बाबा मुस्कराते हुए बोले—**"देखो! बच्ची है, दे दिया है तथा दिया हुआ बच्ची का दान बाबा घर में रख नहीं सकता है।** तुम ले जाओ, बच्चों को पहना देना। मैं बच्ची को दूसरी पहना दूँगा।"

अब दूसरी तरफ जब मैं बाबा के सामने पहुंची तो हाथ में चूड़ियाँ तो थी नहीं। तो हाथ को कपड़ों के आगे-पीछे छिपाकर खड़ी हो गई। बाबा ने कहा "बच्ची, तुम्हारी चूड़ियाँ कहाँ गईं। क्यों छिपाती हो?" तो मैंने कहा बाबा सोना दान करने से राजा बनेगा तो मैंने पंडित जी को दे दी हैं। आपने भी तो दान दिया है, आप राजा बनेंगे तो मैं भी राजा बनूंगी।" तो डांट के बजाय प्यार से बाबा ने कहा "अच्छा बच्ची नया मिलेगा, कोई बात नहीं।"

क्रोध का नाम नहीं

अर्थात् बाबा जानते हुए अनजान तथा बच्चे झूठ नहीं बोलें, अच्छे संस्कार धारण करें, इस प्रकार के कार्य से बाबा खुश होता था। क्रोध वा गुस्से का तो रूप हमने कभी देखा ही नहीं। गाली या अपशब्द, थप्पड़ व मार खाने का तो प्रश्न ही नहीं था। अंश मात्र भी गुस्सा बाबा में नहीं था।

बच्चों को खिलाना, घुमाना, तथा उनके माध्यम से कैसे रॉयल्टी से माल बेचना

इसके साथ-साथ नेपाल के राजाओं के पास भी आना-जाना होता था। लेकिन जब कभी बाबा जाते थे तो साथ में हम सभी बच्चों को भी ले जाते थे। तथा सभी प्रकार के नये-नये फैशन वाले, जेवर हम सभी को पहना देते थे। तो जब भी राजा या रानी हम सभी के गहनों को देखते थे और कहते थे लखी बाबू इस बच्ची के गले में जो हार है, ऐसा ही हमारे लिए बना दो। ऐसा कान में जो कुण्डल है, वही चाहिए। इस प्रकार सभी बच्चों के गहने पसंद कर लिए जाते थे। बाबा कहते थे हाँ २-४ दिन में बन जायेंगे।

मोह ममता से बचना

फिर जब घर आते थे तो बाबा प्यार से सभी खुलवा लेते थे। कारण वो तो बिक्री हो चुके थे। बाबा कहते बासी चीज को बार-बार थोड़े ही पहनते हैं। तुमको नया मिलेगा। कारण हम बाबा के चैतन्य केटलाग (सेम्पल पीस) थे। अतः रोज गहने पहनना व उतारना एक आदत सी बन गई थी। तो इस बचपन की छोटी सी आदत ने ममत्व निकाल दिया अर्थात् बाबा ने हमें मोहममता या

लालच से दूर रखा। तो अन्त में नतीजा यह हुआ कि ज्ञान के बाद भी बाबा पर निश्चय होने के बाद सब कुछ छोड़कर चले आये। उसकी मोह-ममता में रुके नहीं।

सतोप्रधान अर्थात् सात्विक भोजन का प्रयोग शुरू से

घर में तामसिक भोजन का नाम निशान नहीं था। यहाँ तक कि अगर कोई प्याज खाकर भी घर में चला आता था तो हम अम्मा से कहते थे, अम्मा, आप इसे नहीं बुलाओ, इसके मुंह से बू (बदबू) आती है। नेपाल के राजा व बड़े-बड़े अंग्रेज (साहब) भी उस समय माल लेने आते थे लेकिन बाबा उन्हें शराब, सिगरेट आदि कुछ नहीं पिलाते थे। जबकि वो इनके बगैर रह नहीं सकते थे। बाबा कहते थे—**"चाहे राजा हो या बड़े से बड़ा साहब हो। माल ले या नहीं ले, लेकिन वाइन साइन कुछ भी नहीं मिलेगा।"** अर्थात् बाबा अपने निजि सत् धर्म पर सदा अटल रहते थे।

बाबा, श्रीकृष्ण व शिवबाबा पर सम्पूर्ण निश्चय पहला साक्षातकार के द्वारा

जैसे कि आप जानते हैं शिवबाबा की प्रवेशता के पहिले बाबा लौकिक परिवार को बहुत लाड़-प्यार से पालते थे। **लेकिन शिवबाबा की प्रवेशता के बाद ऐसे लगता था जैसे हमें पहिचानता ही नहीं है। ऐसे पूछता था—'किसके सामने खड़ी हो? पहचानती हो?'** ये शब्द सुनकर आश्चर्य लगता था कि जन्मदाता बाप और ये हमसे पूछे कि पहचानती हो? ऐसे मिलता था जैसे हम अनजान हैं। ऐसा सुनकर ज़रा फ़ील (महसूस) होता था कि बाबा को यह क्या हो गया। ऐसा सोचने पर मेरी लौकिक मां मुझे समझाती थी कि ये तुम्हारा बाबा वो पहिले वाला बाबा नहीं है। इसमें परमात्मा आता है। तो मुझे आश्चर्य लगता था। अब मुझे इस बात का सम्पूर्ण विश्वास और निश्चय कैसे हो तथा मेरे लौकिक जीवन में सम्पूर्ण परिवर्तन लाने के लिए विशेष चमत्कार मैंने देखा।

उसी दिन जब मैं रात को सो गई तो फिर से **मुझे वही आवाज आई—पहचानती हो? किसके सामने खड़ी हो?** तो मैंने सोचा आज बाबा से दिन में बात हुई थी, इसलिए मुझे नींद में सपना आता है। फिर जैसे ही सोना चाहा तो कमरे में सूर्य की लाइट (प्रकाश) के समान रोशनी आने लगी। बड़ी तेज लाइट जैसे कोई सर्च लाइट (Search light) आ रही हो। अतः उठकर बैठ गई।

तो क्या देखा—सफ़ेद लाइट के बीच में से बाबा आ रहा है। उसमें कभी श्रीकृष्ण तो कभी साकार बाबा दिखाई दे रहा था। इस प्रकार दोनों ही रूप आपस में अदली-बदली हो रहे थे। तो विचार चला कि ये मेरा बाबा है या श्रीकृष्ण है। इस प्रकार देखते-देखते—बाबा मेरे पास बहुत नज़दीक चला आया। तथा श्रीकृष्ण के रूप में मेरे से हाथ मिलाने लगा—जैसे ही मैंने अपना हाथ उसके हाथ में दिया तो बाबा दिखाई देता है। बाबा के हाथ में मेरा हाथ है—फिर वही कृष्ण बन जाता है।

तो फिर मानसिक रूप में समझ आया कि मेरा बाबा ही श्रीकृष्ण है। माना भगवान है। तो जो बात मैं बिलकुल नहीं मानती थी, वो एक सैकेन्ड में—बाबा ने निश्चय करा दिया कि बाबा भगवान है। कारण उस समय श्रीकृष्ण को ही भगवान मानते थे। बस उसी समय से मेरी बुद्धि में परिवर्तन हो गया। तथा हाथ मिलाते हुए मैंने मन में जैसे प्रतिज्ञा की कि—बस! बाबा, मैंने आपको पहचाना। आप जैसे कहेंगे, जो कहेंगे, मैं वही करूंगी। ऐसा पक्का, निश्चय करने के बाद, दूसरे दिन जब मैं बाबा से मिलने लगती हूँ तो—ऐसे लगता था—'सचमुच मेरा बाबा भगवान है। और जब मैंने मुख से कहा तो बाबा ने कहा—बच्ची, इन्सान भी कभी भगवान हो सकता है क्या? मैंने कहा, हाँ बाबा आप भगवान हैं। उसी दिन से मेरी सारी दिनचर्या में महान परिवर्तन आ गया।

कारण पहिले जीवन फैशनवाली, खाओ, पीओ, मौज करने वाली थी। लेकिन अब वो आन्तरिक

रूप से बदल गई। मन में वैराग आ गया तथा सादगी का जीवन अच्छा लगने लगा। वैसे घर में नौकर आदि सब थे। हाथ से पानी पीने की भी दरकार नहीं थी। लेकिन अब तो जो काम कभी भी नहीं किया था, वो बड़े प्यार से करने लगी। जैसे खाना बनाना सीखा—तो पहिले-पहिले हाथ जला। घर की सफ़ाई आदि के कार्य को देखकर ससुराल वाले आश्चर्य खाने लगे। इसको क्या हो गया !

बाबा के द्वारा ईश्वरीय शक्ति का पहला आभास

इसके ठीक दो मास बाद मैं बाबा के साथ काश्मीर गई। और भी सारा लौकिक परिवार साथ में था। वहाँ पर एक आश्चर्य और देखा तथा अनुभव किया कि मैं तो कोई खास पढ़ी हुई नहीं थी। सिर्फ दो क्लास पढ़ाई की थी। परन्तु बाबा मुझे कहते थे बच्ची जाओ और ज्ञान की बातें कुछ लिखकर ले आओ। मैं कहती बाबा मुझे कुछ नहीं आता है। मैंने तो कोई वेद पुराण शास्त्र नहीं पढ़े हैं। फिर भी बाबा ने कहा तो जी हाँ, करके मैं पेड़ के नीचे जाकर बैठ जाती तथा कागज और पेन लेकर बाबा को कहती अब आपको जो लिखना है वो लिखाइये। **तो देखा कि तीन-तीन पृष्ठ लिख डाले थे। फिर जाकर बाबा को दिखाते थे तो बाबा कहते पढ़कर सुनाओ तो सुनने पर मालूम पड़ता था कि ये तो मेरी लिखत नहीं है। बाबा ने ही यह सब मेरे हाथ से लिखवाया है। यह भी एक विचित्र लीला थी। तथा वो ही ज्ञान की बातें मुरली के रूप में बाबा सिंध हैदराबाद में भेजते रहते थे।** उसी से वहाँ रोज़ क्लास होता था। रोज़ काश्मीर से इस प्रकार लिखना, पढ़ना करने के कारण मेरी बुद्धि में भी बैठता रहता था तब ये पवित्रता, निर्विकारी जीवन, सेवा और धारणा आदि की बातें स्वतः ही अच्छी तरह समझ में आने लगीं।

सर्वगुण सम्पन्न बनाने की युक्ति—कर्मयोगी

अब बाबा कहा करते थे कि बच्ची सर्वगुण सम्पन्न बनने के लिए सब कुछ सीखना चाहिए। तो सब प्रकार का खाना पकाना सीखा। बाबा कहते कि अगर तुमको खाना बनाना नहीं आता है—तो समझो तुमको किसी भी तरह की चीज़ खाने की इच्छा हुई लेकिन तुम नहीं बना सकती हो। तुम दासी को भी तुम कहोगी और उसको भी नहीं बनाना आता है, इसका माना तुम्हारी इच्छा तो पूरी नहीं हुई। तथा तुम दासी की भी दासी हो गई। अगर जानती तो झट उसको सिखा सकती हो। जो दासी जितना भी कार्य नहीं कर सकती वो विश्व का महाराजा कैसे बनेगी। अतः महारानी बनने के लिए सर्व प्रकार के कार्य सीखना जरूरी है।

इस प्रकार बाबा ने बातों-बातों में ही **जूते बनाना, गाड़ी चलाना, साईकिल चलाना, पंचर ठीक करना, ब्रिज बनाना, फोटो खींचना, धुलाई करना, टांकी बनाना, बर्तन सफाई करना** आदि आदि सब कुछ प्यार से सिखा दिया।

यहाँ तक कि इतने बड़े-बड़े बर्तन जिसमें मेरा हाथ भी नहीं पहुंचता था तो उसके भीतर घुसकर भी साफ़ करती थी। माना किसी भी प्रकार का कार्य करने में न तकलीफ़, न कोई मान शान, बल्कि सारा कार्य खुशी-खुशी से सहज हो जाता था।

एक बार किसी का चप्पल टूट गया। बाबा के पास लेकर आया। बाबा ने कहा कि बच्ची—छोटा सा काम है, इसको बना दो। तो **मैंने कहा बाबा—"मैं कोई मोची थोड़े ही हूँ"**—जो चप्पल बनाऊँ। तो बाबा बोले **क्या बच्ची को मोची जितना भी अक्ल नहीं है। तो सतयुग में महारानी कैसे बनोगी। बाबा के ऐसे जादू भरे शब्दों से ही शक्ति आ जाती थी।** मैंने बाबा व मम्मा के लिए भी चप्पल बनाई, फिर तो सबके लिए चप्पल यज्ञ में बनना शुरू हो गया।

इस प्रकार जो काम कभी सोचा नहीं, समझा नहीं, पढ़ा नहीं; वो बाबा के कहने मात्र से कैसे हो जाता था, आश्चर्य लगता था। गाड़ी का सारा इंजन खोलते जाते, उनका नाम व साइज लिखते जाते, फिर उसको फिट करके चलाते थे। चलने लगने पर खशी होती थी, हमने इंजन बनाना

सीख लिया। इस प्रकार हर कार्य का सीखना ही खुशी थी।

रोने की आदत को हमेशा के लिए बन्द करना

बचपन में मुझे रोना बहुत आता था। कोई भी थोड़ा सा भी कुछ कह देता था तो मुझे रोना आ जाता था। तो सभी बाबा को जाकर कहते थे, बाबा, इसको तो कुछ भी कहो रोने लगती है। बाबा ने मुझे बुलाकर कहा—क्यों बच्ची, तुम्हें रोना आता है। मैंने कहा बाबा मेहनत भी करती हूँ, फिर भी ये मुझे डांटते हैं। बाबा बोले बच्ची, रोती है विधवा। तुम तो सजनी हो। तुम्हारा पति अमर है। आज से रोयेगी कभी ? तो मेरे मुख से निकल गया—नहीं। बस तब से लेकर आज तक रोना तो याद ही नहीं है। कुछ समय बाद जब मेरी लौकिक माँ ने शरीर छोड़ा उस समय मैं उसके पास थी। मेरी गोदी में ही अम्मा का सिर था। उसकी आत्मा स्टार (तारे) के माफिक मेरे सामने निकलकर उड़ गई। तो ध्यान में रहा कि आत्मा चली गई है। शरीर पड़ा है। फिर बाबा को तार द्वारा समाचार भेजा तो बाबा का पत्र आया—बच्ची ठीक हो ना !" **"अम्मा मरे तो भी हलुआ खाओ, बीबी मरे तो भी हलुआ खाओ"**। कारण मेरी अम्मा बाबा की बीबी दोनों एक ही थी। इसलिए तब से ज्ञान मुरली में बाबा सबको यही शिक्षा देते थे। इसके बाद मेरी लौकिक बुआ (जिसने मुझे गोद लिया था।) माँ के समान थी, शरीर छोड़ा, बाबा ने शरीर छोड़ा, मम्मा के साथ तो शुरू से रही। लेकिन सबके शरीर छोड़ने पर कभी भी नहीं रोया। यह भी बाबा का विशेष चमत्कार या वरदान समझो।

कभी मूड आफ नहीं

बाबा का हमने कभी भी मूड ऑफ नहीं देखा। सदा मुस्कराते, शान्त व गम्भीर तथा रमणीक ही देखा।

बाबा की नजरों में अमीर-गरीब एक समान

बाबा से जो भी मिलता था वो यही कहता था कि बाबा मेरे को ही ज्यादा प्यार करते हैं। कारण बाबा की नजरों में अमीर-गरीब, छोटे-बड़ों का कोई ज्ञान नहीं था। सबको बच्चा-बच्चा कहकर पुकारते थे तथा प्यार करते थे। यहाँ तक कि लौकिक में जो हमारी आया थी, कपड़ा धोती थी। जब ज्ञान में आ गये तो कपड़ा तो वही धोती थी। लेकिन बाबा के सामने आयेगी तो जैसे हमको टोली देता होगा तो उसे भी कहेगा—आओ बच्ची, टोली खाकर जाओ। पहिले ऐसा व्यवहार नहीं करते थे। नौकर व मालिक का कोई भेदभाव नहीं था। ऐसे थे निरहंकारी हमारे मीठे बाबा—

लो फिर आ गया नव वर्ष

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

लो फिर आ गया नव वर्ष हर वर्ष की भाँति !

इस बार रचाना संसार नया,
भूल जाना पुराना बीत जो गया,
कहें तब मुबारक ! लगे मुस्कानों की पाँति।
लो फिर आ गया नव वर्ष हर वर्ष की भाँति ।।

नए संकल्प, नए सम्बन्ध औ कर्म नया,
हो दिव्यता नए पन में, दैहिक दृष्टिकोण गया;
तब कहेंगे मुबारक ! होगी यथार्थ शान्ति।
लो फिर आ गया नव वर्ष हर वर्ष की भान्ति ।।

यह वर्ष 'शान्ति वर्ष', खोले 'स्वर्ण-वर्ष' का द्वार,
पत्थर न रहे पत्थर, बनें हम ऐसे पारसनाथ;
कहेंगे तब मुबारक ! आएगी शान्ति की क्रान्ति।
लो फिर आ गया नव वर्ष हर वर्ष की भाँति ।।

हो 'कर्म की आवाज' 'मुख की आवाज' के संग,
बाहर की 'ग्रीटिंग' के पहले 'ग्रीट' करे अन्तरंग;
कहेंगे तब मुबारक ! आएगी आत्मा में क्रान्ति।
लो फिर आ गया, नव वर्ष हर वर्ष की भान्ति ।।

सब हम लेवें संकल्प शिवबाबा के आगे,
नया वर्ष न होने देंगे पुराना जोड़ें टूटे धागे;
मनेगी 'स्वर्ण-जयन्ती' तभी फैलेगी विश्व में शांति।
लो फिर आ गया नव वर्ष हर वर्ष की भाँति ।।

स्मृति दिवस—न्यारे व प्यारे बनने का प्रेरक

ब्र० कु० सूरजकुमार, माउण्ट आबू

भगवान को पाकर भी भला कोई क्यों मग्न नहीं होगा। यज्ञ-पिता प्रजापिता ब्रह्मा ने भगवान को पाया ही नहीं, वरन् उनको अपने में समा लिया, अपना तन ही परमपिता को दे दिया। और स्वयं मग्न हो गये प्रभु की अलौकिक मस्ती में। जिनका प्रथम आदर्श बना—कर्मों में न्यारापन, देह से न्यारापन···वे इस देह में रहते हुए भी जैसे कि इसमें नहीं रहते थे। देखने वालों को अनेक बार उनकी साकार देह दिखाई भी नहीं देती थी। और यह न्यारापन ही उन्हें सम्पूर्ण विश्व का प्यारा पिता बना सका।

ईश्वरीय ज्ञान का लक्षण ही है न्यारापन अर्थात् अलौकिकता। यदि ज्ञानी आत्माएं भी उसी तरह कर्म करें जैसे कलियुगी मनुष्य करते हैं, यदि वे भी मनुष्यों की तरह ही व्यवहार करें, यदि वे भी जीवन यात्रा में मनुष्यों की तरह ही सफर करें तो उनके ज्ञानीपन का लक्षण ही क्या। ईश्वर ने आकर कर्म करने का अलौकिक ज्ञान दिया, कर्म करने का ऐसा ज्ञान दिया जिससे आत्मा कर्म बन्धन से ही मुक्त हो जाए। व्यवहार का ऐसा ज्ञान दिया जिससे मनुष्य देव-सम प्रतीत हो। विश्व में विचरण करने का ऐसा ज्ञान दिया जिससे देखने वालों को लगे कि ये हमसे भिन्न हैं, वे इस संसार में विचरण करते हुए भी मानो यहाँ नहीं हैं।

प्रस्तुत चर्चा में ब्रह्मा बाबा के आदर्शों को सम्मुख रखते हुए हम न्यारेपन व प्यारेपन की अलौकिक स्थिति का विश्लेषण करेंगे। वास्तव में यह क्या है और कैसे ईश्वरीय सेवा में सर्वश्रेष्ठ साधन सिद्ध होती है और हमें अनेक विघ्नों से बचाकर सर्व के सहयोग के पात्र बनाती है।

हम सभी को लौकिक या ईश्वरीय परिवार में रहना होता है, सभी को कोई न कोई जिम्मेदारी भी सम्भालनी होती है। सभी को दूसरों के सम्पर्क व सम्बन्ध में भी आना होता है। परन्तु न्यारापन हमें मोहग्रस्त होने से बचाता है, न्यारापन हमें दूसरों के प्रभाव से बचाता है। अन्यथा यह बात स्वाभाविक सी हो गई है कि प्रत्येक मनुष्य सारा ही समय किसी न किसी व्यक्ति वा वस्तु के प्रभाव के अधीन होकर ही चलता है, उसका मन सदा ही किसी प्रभाव से बन्धा रहता है जबकि न्यारेपन का अभ्यासी स्वयं के स्व ऐच्छिक विचारों का आनन्द ले सकता है।

ऐसे न्यारेपन के लिए सर्वप्रथम स्वयं के देह से न्यारेपन की वृत्ति धारण करनी होगी। यही न्यारापन हमें कर्म में न्यारेपन का अनुभव करायेगा। दूसरी बात—बुद्धि में केवल अपना सम्पूर्ण लक्ष्य ही दृढ़तापूर्वक समाया हो। जैसे एक मेधावी विद्यार्थी को विश्व विद्यालय में प्रथम स्थान पाने का लक्ष्य इतना दृढ़ रहता है कि उसके मन का खिंचाव, अनेक आकर्षण होते हुए भी उनकी ओर नहीं जाता। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के जिन विद्यार्थियों को सम्पूर्णता प्राप्त करने का लक्ष्य जितना दृढ़ होगा, उतने ही वे संसार की चकाचौंध से निर्लिप्त रहेंगे।

न्यारापन सूखापन नहीं है

कई पुरुषार्थी न्यारेपन को जीवन में सूखापन समझने की भूल करते हैं। फलस्वरूप परिवार से, जिम्मेदारियों से या सेवाओं से किनारा करने लगते हैं। यह गलत है तथा मार्ग में कठिनाई पैदा करने वाला, व ईश्वरीय ज्ञान को बदनाम करने वाला है। ऐसी प्रवृत्ति ने रुष्ठ होकर परिवारजन मार्ग में बाधा उत्पन्न करने लगते हैं। किनारा करना है व्यर्थ बातों से व व्यर्थ संग से। न्यारेपन का यह अर्थ नहीं है कि हम अपने परिवारजन या बच्चों से प्यार

न करें, उन्हें प्यार की अनुभूति न करायें। प्यार सभी से हो, परन्तु बुद्धि योग एक ही परमपिता से हो। यही है यथार्थ अर्थ में न्यारापन। यह न्यारापन हमें सबका प्यारा बनाता है, कोई भी हमसे नफ़रत नहीं करेगा, कोई भी दुर्व्यवहार नहीं करेगा।

ब्रह्मा बाबा का न्यारापन

वे ज्यों-ज्यों अपनी सम्पूर्ण स्थिति के समीप होते गये, उतने ही अधिक न्यारे होते गये और उतने ही सबके प्यारे होते गये। उन्होंने सबसे महान त्याग किया, परन्तु त्याग के बाद वे उससे इतने न्यारे हो गये कि उन्होंने कभी पैसा देखा भी नहीं, उन्हें वास्तव में तो अपने त्याग की भी अविद्या हो गई। वे कहा करते थे कि—"बच्चे, बाबा ने क्या छोड़ा पत्थर ही तो छोड़े, परन्तु बदले में तो ज्ञान-रत्न मिले।" जबकि आजकल लोग थोड़ा सा त्याग करके या धन की सेवा करके उसके अहं में रहते हैं और उसका फल मान-शान के रूप में साथ-साथ ही चाहते हैं जिस कारण उन्हें उनके त्याग का बल प्राप्त नहीं होता।

वे इतने बड़े ईश्वरीय परिवार के पिता होते हुए तथा सभी बच्चों को सम्पूर्ण प्यार देते हुए भी न्यारे रहे। क्योंकि वे तो सतत एक परम प्रियतम के प्यार में डूबे रहते थे। मनुष्यों से प्यार की कामना न्यारेपन से दूर ले चलती है और प्यार के दातापन की भावना हमें प्यार बाँटते हुए भी न्यारेपन की श्रेष्ठ अनुभूति में रखती है।

ब्रह्मा बाबा पर सम्पूर्ण यज्ञ की, विश्व-परिवर्तन की व हजारों बच्चों के जीवन की पूरी जिम्मेदारी थी। वे रात-दिन ईश्वरीय सेवा में, आत्माओं की समस्या हल करने में और अनेकों की पालना करने में व्यस्त रहते थे। परन्तु सदा ही बाबा को निश्चिन्त देखा गया, सदा ही उन्हें सरल चित्त पाया गया—यह उनकी न्यारेपन की स्थिति के कारण ही था। आज एक छोटे से परिवार को सम्भालने वाले व्यक्ति का मन परेशान रहता है, उसका मन बोझिल व चिन्ताग्रस्त रहता है, क्योंकि उसने न्यारा रहना नहीं सीखा है।

बाबा, ईश्वरीय सेवा समाचार सुनते हुए, बातचीत करते हुए भी बहुत न्यारे रहते थे। उनका न्यारापन अन्त में इतनी सूक्ष्मता तक पहुँच चुका था कि जो भी उनके समीप जाता था, वह एक सुखद सन्नाटे का अनुभव करता था। सभी देखने वालों को यह अनुभव होता था कि बाबा सुनते हुए व देखते हुए भी यहाँ नहीं हैं।

अन्तिम दिनों में बाबा अति गहन शान्ति के अनुभव में रहने लगे थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपने कमरे में लगी घड़ी की टिकटिक को भी बन्द करा दिया था। कई बच्चे प्रातः काल बाबा को गुडमॉर्निंग करने जाते थे, परन्तु उन दिनों बाबा ने कहा—"बच्चे प्यार से गुडमार्निंग करने आते हैं तो बच्चों को मान देने के लिए बाबा को अशरीरीपन की मीठी स्थिति से नीचे उतर कर गुडमार्निंग करना पड़ता है और बाबा फिर अशरीरी हो जाते हैं। परन्तु उस समय बाबा को आवाज़ में आना अच्छा नहीं लगता।"

बाबा ने हम सबके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। ईश्वरीय ज्ञान के बल से और सर्व शक्तिवान के बल पर स्थिर वे आदि पुरुष बेगरी पार्ट के लम्बे समय में भी अविचलित रहे। भय और चिन्ता उन्हें छू नहीं पाई। ३५० भाई-बहनों की पालना और भण्डारे समाप्त···कल्पना करें, एक आम आदमी तो मैदान छोड़ भागे। परन्तु बाबा के चेहरे पर वही न्यारापन, वही निश्चिन्तता व वही अडोलता थी।

निमित्त भाव से न्यारापन

प्रायः देखा जाता है कि कोई भी जिम्मेदारी या अधिकार मिलने पर मनुष्य अपने न्यारेपन के लक्ष्य को भूल कर उसका स्वरूप बन जाता है। वह यह भूल जाता है कि यह कार्य तो करन-करावनहार परमपिता का है, उसने मुझे निमित्त बनाया है। वह यह निमित्तभाव भूलकर मैं-पन की दीवारों में अटक जाता है। फलस्वरूप संगम

युग के सुखों के क्षणों को बोझिल क्षणों के रूप में अनुभव करता है।

परन्तु चाहे हम ईश्वरीय सेवा के जिम्मेदार हों या परिवार के संरक्षक, हमें स्वयं को निमित्त ही समझना चाहिए। असली संरक्षक, शक्तिदाता तो सर्वशक्तिवान है। बच्चे तो सब उसके हैं, कार्य तो उसका है, हमें तो मात्र इसे सम्पन्न करना है व इसको आधार बनाकर सर्वशक्तियाँ प्राप्त करनी हैं। परन्तु यदि हम इन कार्यों में ही अटक गये तो कार्य तो हमारे साथ नहीं जाएगा और अन्त में हम स्वयं को खाली व अकेला महसूस करेंगे। तो आओ हम सभी आत्माएँ इस स्मृति दिवस पर न्यारे व प्यारे के सन्तुलन रखने का संकल्प करें।

देखते हुए भी न देखना

आँखें प्रति पल खुली हैं और विभिन्न दृश्य निहार रही हैं परन्तु इन पदार्थों में व इस दृश्यमान विश्व में विनाशी भाव रखना ही न्यारापन है। संसार में चारों ओर देखने की आदत व संसार की अनेक वस्तुओं को प्राप्त करने की कामना न्यारापन नहीं है। जिनका तीसरा नेत्र खुल चुका है, उनके ये दो नेत्र इस विश्व की विनाशी वस्तुओं को जैसे कि देखते हुए भी नहीं देखते। उनके पैर धरती पर ठहरते हैं और मन परमपिता के पास। उनकी आँखें यहाँ खुली हैं, परन्तु वे सदा ही अदृश्य आत्मा व परमात्मा को देखते हैं।

आत्मा को देखने की अभ्यासी आत्मा, इस संसार को देखते हुए भी नहीं देखती। उसके मन पर संसार के मनुष्यों व वस्तुओं का प्रभाव नहीं पड़ता। आत्मा देखने वाला योगी दूसरों को एक न्यारा व प्यारा व्यक्ति दृष्टि गोचर होता है। आत्मा देखने का अभ्यास मन के विचलित भाव को एकाग्र कर देता है।

कर्म करते हुए भी न्यारे

कहावत है—'नेकी कर दरिया में डाल'। तो कर्म करो, सहयोग दो, सहयोग लो और न्यारे हो जाओ। आत्माओं के साथ व्यवहार में आओ और न्यारे हो जाओ। यही हमारी अन्तिम सर्वश्रेष्ठ स्थिति है जो हमें कर्मातीत स्थिति की ओर ले चलती है।

कर्म समाप्त करते ही कर्म के वर्णन व चिन्तन से मुक्त हो जाओ। कर्म-उपरान्त उसकी महिमा सुनने या महिमा करने की इच्छा से परे होकर इस देह से न्यारे बन कर अपने वतन में परमपिता की शीतल छाया में चले जाओ और उन कर्मों को उनको समर्पित कर दो। ऐसा करने से उत्पन्न शारीरिक या मानसिक थकान भी तत्काल ही समाप्त हो जाएगी और ऐसा लगेगा कि हमने कुछ भी नहीं किया। परन्तु कर्म के बाद उसका चिन्तन या चिन्ता करना न्यारापन नहीं है। कर्म में असफल होने पर भी उसकी चिन्ता या विचलित भाव न्यारापन नहीं है। अतः कर्म समाप्त होते ही ब्रह्मा बाबा की तरह ऐसे ही न्यारे हो जाओ कि मानो सब कुछ करते हुए कुछ भी कर नहीं रहे हैं।

प्यारे बनने के लिए न्यारे बनो

किसी के भी प्यारे बनने का पुरुषार्थ करना ही गलत तरीका है। इससे सदा काल का प्यार नहीं मिलता। अतः चाहे आप आत्माओं का प्यार पाना चाहते हैं या परमात्मा का, अपने लौकिक परिवार में सबके प्यारे बनना चाहते हैं या ईश्वरीय परिवार में—उसके लिए यथार्थ पुरुषार्थ है—न्यारापन।

इस सम्बन्ध में भगवानोवाच है—'जो देह से न्यारा बनने में जितना आगे होंगे, वे विश्व का प्यारा बनने में भी उतना ही आगे होंगे। जो आत्माओं का प्यारा बनने का पुरुषार्थ करते हैं वे आत्माओं से भी व बाप से भी उतना ही दूर हो जाते हैं।"

सचमुच न्यारी वस्तु तो सबको ही अच्छी लगती है। एक न्यारी वस्तु की ओर स्वतः ही सबका ध्यान जाता है। हमारा न्यारापन सभी को रूहानियत की ओर आकर्षित करेगा। यह न्यारापन ही सत्य ईश्वरीय ज्ञान को प्रत्यक्ष करेगा। यह न्यारापन ही तो दिव्यता है—जो संसार में

और कहीं नहीं बल्कि ईश्वरीय बच्चों के जीवन में ही देखा जा सकता है।

न्यारेपन का अभाव, सेवाओं में विघ्न

इस न्यारेपन के अभाव में ही, कहीं भी एक आत्मा दूसरे के गुणों से या सेवाओं से प्रभावित होकर उनमें अटक जाती है और उसका ही प्यारा बनने का पुरुषार्थ करने लगती है। और यही लौकिकता ईश्वरीय जीवन में विनाशकारी सिद्ध होती है, सेवाओं को असफल करती है व वातावरण में दूषितता लाती है। सेवाओं में आसक्त भाव यथार्थ लक्ष्य से दूर ले जाता है और परिणामतः न सेवाएँ फलीभूत होतीं और न ही लक्ष्य प्राप्त होता। अतः हमारी स्थिति ऐसी न हो जो कोई कहे कि ये तो केवल अमुक व्यक्ति को ही प्यार करते हैं, उन्हें ही चाहते हैं।

ईश्वरीय सेवा तो बल प्रदान करती है। हम यदि सेवाओं से चिन्तित हैं, हम यदि सेवाओं की व्यस्तता के कारण स्वस्थिति में नहीं रहते तो यह हमारे न्यारेपन के अभाव के कारण ही है।

तो आओ हम सभी, इस १८ वें स्मृति दिवस पर न्यारेपन की स्मृति से स्वयं को रूहानियत से भरें। समय के इस अन्तिम चरण में देह व देह के पदार्थों से न्यारे होने का दृढ़ संकल्प करें ताकि साकार ब्रह्मा की मूर्त हम में साकार हो सके और आने वाले विकट काल के विकट प्रभाव से मुक्त रहकर, ईश्वर का दिव्य दर्पण बनकर, हम सब तड़पती आत्माओं को शान्ति प्रदान कर सकें।

○

अश्रु नहीं बहाए जाते हैं

हे आदि देव, हे युग पुरुष
श्रद्धा सुमन तुम्हें समर्पित हैं।
तुम छोड़ गये चिन्ह निज आदर्शों के,
हम चलने को उन पर संकल्पित हैं।
सृष्टि पर जो तुम खेल गए,
वो चरित्र नहीं भुलाए जाते हैं।
स्मृति दिवस पर हम हर्षित होते,
हमसे अश्रु नहीं बहाए जाते हैं॥

तन-मन-धन, सब कुछ बलिहार किया,
झूठा धंधा छोड़ा, रत्नों का व्यापार किया।
माँ-बाप का सच्चा प्यार दिया तुमने,
और ईश्वर को साकार किया।
गुण भर दिए तुमने ऐसे अनेक,
जो छिपाने से नहीं छिपाए जाते हैं।
स्मृति दिवस पर हम हर्षित होते,
हमसे अश्रु नहीं बहाए जाते हैं॥

बेसहारों को तुमने सहारा दिया,
डूबतों को तुमने किनारा दिया।
हर मानव को राहत मिली दिल की,
हर नजर को सुख का नजारा दिया।
प्रेम दीप जो रोशन किए तुमने,
वो आँधी-तूफाँ से नहीं बुझाए जाते हैं॥
स्मृति दिवस पर हम हर्षित होते,
हमसे अश्रु नहीं बहाए जाते हैं।

मानव को तुमने देव बनाया,
सच्चा गीता ज्ञान सिखाया।
विश्व सेवक बने, विश्व रक्षक बने
और करके, सदा करना सिखाया॥
जो उपकार किए तुमने जगत पर,
वो पैसों से नहीं चुकाए जाते हैं।
स्मृति दिवस पर हम हर्षित होते,
हमसे अश्रु नहीं बहाए जाते हैं॥

ब्र० कु० प्रकाश, भोपाल

कहानी

सत्य को बताने वाला कौन ?

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

एक बार की बात है कि एक विद्वान महोदय ने एक संस्कृत का श्लोक पढ़ा और उसकी व्याख्या करनी प्रारम्भ की। श्लोक में यह कहा गया था कि मनुष्य को चाहिए कि वह १०० हों तो खाना खाए, १००० हों तो नहाए, १००,००० हों तो दान करे और १,००,००,००० हों तो भी प्रभु को याद करे। वक्ता ने इसका यह अर्थ किया कि यदि मनुष्य को सौ काम भी हों तो वह उन्हें छोड़ कर भी खाना खाए, हज़ार काम हों तो उन्हें एक तरफ करके भी ज़रूर नहाए, लाख काम हों तो भी दान करने से न चूके और चाहे करोड़ काम क्यों न हों, फिर भी वह समय निकाल कर प्रभु का ध्यान ज़रूर करे। ऐसा अर्थ करके इसकी व्याख्या करते हुए वह बोला कि इस श्लोक में बहुत ही ज्ञान भरा हुआ है। स्पष्ट करते हुए उसने कहा कि कई बार मनुष्य अधिक काम होने से अपने खान-पान की ओर भी ठीक ध्यान नहीं देता; कभी खाता है कभी नहीं खाता और यदि खाता भी है तो समय पर नहीं खाता। भला यह भी कोई जीवन है कि मनुष्य कोल्हू के बैल की तरह काम तो करता रहे और खाना भी न खाए ? आखिर इस शरीर रूपी इंजन को भी पेट्रोल चाहिए। अगर कोई व्यक्ति २ दिन खाना नहीं खाएगा या ठीक समय पर खाना न खाए तो या तो वह कमज़ोर हो जाएगा या अस्वस्थ फिर भला वह काम भी क्या कर सकेगा ? इसीलिए किसी ऋषि ने ठीक ही कहा है कि चाहे १०० काम हों परन्तु उन्हें एक तरफ रखकर खाना ज़रूर खाना चाहिए।

फिर बहुत बार यह भी देखा जाता है कि काम काज वाला व्यक्ति या तो नहाता नहीं या दो लोटे पलटकर ठीक तरह से नहीं नहाता। भला यह भी कोई बात है ? काम हुआ तो क्या हुआ, नहाना भी तो एक ज़रूरी काम है।

इसी प्रकार और आगे व्याख्या करते हुए वह विद्वान बोला कि श्लोक के बुद्धिमान रचयिता ने कहा है कि काम का बहाना बनाकर दान न देना या प्रभु का नाम न लेना भी ग़लत है।

वे ऐसी व्याख्या कर रहे थे कि सभा के बीच में बैठा हुआ एक बनिया इस व्याख्या से सहमत न होने के प्रतीक रूप अपने सिर को बाँये से दाँये और दाँये से बाँये हिला रहा था। तब उन विद्वान महोदय ने पूछा—"लाला जी, क्या आप कुछ कहना चाहते हैं ? मालूम होता है कि आपका कोई दूसरा ही भाव है। क्या आप मेरी व्याख्या से सहमत नहीं हैं ?"

बनिया बोला—"महोदय, संस्कृत मैंने भी पढ़ी है और मैं समझता हूँ कि इस श्लोक का वह अर्थ तो हो ही नहीं सकता जो आप कर रहे हैं। आपने जो अर्थ लिया है, वह मेरे मन्तव्य के अनुसार तो त्रुटिपूण है। आशा है, आप मेरी स्पष्टवादिता के लिए मुझे क्षमा करेंगे।"

विद्वान महोदय बोले—"विचारों में अन्तर तो हुआ ही करता है। कृपया आप ही बता दीजिए कि इसका क्या अर्थ है ताकि अगर कोई त्रुटि रह गई हो तो पूरी हो जाए।"

तब वह बनिया बोला—"महाराज, श्लोक में तो यह कहा है कि जब १०० (रुपये) हो जाएँ तो खाना खालें और हज़ार (रुपये) हों तो नहाले, लाख (रुपये) हों तो दान करे और करोड़ (रुपये) हों तो प्रभु का नाम ले।"

विद्वान महोदय ने कहा—"लाला जी, भला

इसका यह अर्थ कैसे हुआ ? श्लोक में रुपये शब्द तो है ही नहीं।"

बनिया बोला—"इसका अर्थ समझने वाले ही समझेंगे। 'रुपये' तो अन्डरस्टुड (Understood) हैं। यह बात सब नहीं समझ सकते। जान बूझकर ही श्लोक में यह शब्द लिखा नहीं गया। श्लोक में यही तो पते की बात है और यही गहराई भी है…"

सभा में बैठे हुए कुछ लोग मुस्कुराने लगे और कुछ हंसने। अपनी बैठक को बनिये की ओर मोड़-कर कुछ तो उन्हें देखने लगे और कुछ कभी विद्वान की ओर और कभी बनिये की ओर। स्वयं बनिया भी उपरोक्त शब्द बोलकर खिलखिलाने लगा और बोला—"आप लोग हैरान क्यों होते हैं ? आप इसकी व्याख्या सुनें तो कपाट खुल जायेंगे।" देखिये, मैंने जो कुछ कहा है, वह किस तरह ठीक है।"

श्लोक में यह कहा है कि जब मनुष्य के पास कम से कम १०० रुपये इकट्ठे हो जाएँ तब खाने-पीने की तरफ कुछ ध्यान दे। इतने भी पैसे अगर मनुष्य के पास न हों तो उसे खाना-पीना भला कैसे सुहायेगा ? मनुष्य के पास कुछ रुपया जमा हो जाए तभी तो वह चैन से बैठकर खाएगा और उसे खाना अच्छा भी लगेगा। ऐसे ही जब हज़ार रुपये इकट्ठे हो जाएँ तभी तो मनुष्य मसल-मसल कर दो-चार बाल्टी नहायेगा वर्ना तो नहाना, न नहाना बराबर ही है। जब तक मनुष्य के पास कम-से-कम इतना पैसा जमा न हो जाए तब तक तो उसकी यह नीयत बनी रहती है कि फटाफट २-४ लोटे पलटकर और जल्दी-जल्दी निमटकर काम पर रवाना हो जाएँ ताकि ऐसा न हो कोई अच्छा ग्राहक दुकान बन्द देख कर निकल जाए। और दान देने की तो बात ही नहीं होती जब तक पहले अपने पास लाख रुपये न हो जायें। लाख से कम वाला व्यक्ति किसी के कहने से दान देगा भी तो वह उसके मन को अखरेगा ज़रूर, तब ऐसे दान का क्या फायदा ? पहले लाख रुपया हो, फिर दान करे तो कुछ अच्छा भी लगे। और, करोड़ रुपया होने से पहले अगर भगवान को याद करने की कोशिश भी करेगा तो याद उसे पैसा ही आएगा, मन में भगवान का चित्र तो जमेगा नहीं। तराजु, ग्राहक, बट्टे और दुकान, इन्हीं का चित्र उसके मन पर अंकित होगा।

इस प्रकार लोग इन विभिन्न प्रकार की व्याख्याओं से उलझ गए। सही बात क्या है ? वे इसके बारे में सोच ही रहे थे कि इसी बीच वहाँ एक अनुभवी और महान पुरुष का आगमन हुआ। सभी लोग उनकी ओर मुड़कर उनसे जानने के लिए उत्सुक हो उठे। सबकी इच्छा को जानकर उन्होंने इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार बताया। वे बोले—इसमें यह कहा गया है कि जो आपकी कमाई हो उसमें से उसका कम-से-कम सौवाँ, हिस्सा दान करने के बाद ही खाना चाहिए। जो मनुष्य इतना भी दान नहीं करता, वह खाने का अधिकारी नहीं होता। आगे इसमें यह कहा गया है कि जब सूर्योदय हो तो स्नान तब तक अवश्य कर लेना चाहिए क्योंकि 'सहस्र' शब्द हज़ारों किरणों वाले सूर्य का वाचक है। इसी प्रकार 'लक्ष' शब्द केवल लाख ही का वाचक नहीं बल्कि देखने अथवा ध्यान देने का भी वाचक है। अतः इसका भाव यह है कि पात्र और अपात्र का ध्यान रखकर ही दान देना चाहिए। और, अन्त में यह कहा गया है कि जब मनुष्य के पास करोड़ रुपये हों तब तो उसे और कमाने की ज़रूरत ही क्या है। तब उसे पूरी तरह ईश्वर-स्मरण में लग जाना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संसार में लोग एक श्लोक के ही अनेक अर्थ बताते हैं। सत्य क्या है, असत्य क्या है—इसके बारे में मनुष्य उलझन में पड़े रहते हैं। मनुष्य तो यथा योग्य यथा शक्ति अपनी-अपनी ही बात कहते हैं। आखिर एक पर-मात्मा ही हैं जो सत्य स्वरूप हैं, वही आकर जब सत्य ज्ञान देते हैं, तभी मनुष्य को सही मार्ग-दर्शन मिलता है।

महबूब नगर में आयोजित राजयोग शिविर का उद्-घाटन करने के पश्चात् भ्राता डि०टी० नायक जिला पुलिस प्रमुख तथा उनका परिवार ब्र० कु० नीरा से चित्रों पर ध्यान पूर्वक समझते हुए।

मोरबी में ब्र० कु० शारदा तथा रमा बहिन आध्यात्मिक समारोह में मुख्य अतिथि भ्राता अमुभाई तथा नाथा-भाई का स्वागत करते हुए। सामने रमीला बहिन बैठी है।

बरनाला सेवाकेन्द्र की ओर से रामपुरा में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन दृश्य। ब्र० कु० ब्रज, भ्राता लेखराज बचनसिंह तथा अन्य खड़े हैं।

राजगांगपुर (उड़ीसा) में चार दिवसीय चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर जी० एम० भ्राता चांद जी को ब्र० कु० ममता चित्रों की व्याख्या देते हुए।

ऊंझा सेवाकेन्द्र द्वारा विसनगर में आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन भ्राता रमणीक लाल मणीयार, प्रमुख नगरपालिका विसनगर कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० तृप्ति बहिन और अन्य भाई हैं।

यवतमाल सेवाकेन्द्र की ओर से पुसदतालुका में आयोजित प्रदर्शनीका उद्घाटन नगराध्यक्ष भ्राता आसेगावकर द्वारा सम्पन्न हुआ, उनका स्वागत किया जा रहा है। साथ में भ्राता डॉ० जानु, भ्राता डॉ० भण्डारी, ब्र०कु० शोभा, भ्राता घुलेजी दिखाई दे रहे हैं।

मनुष्य की कीमत

ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

चहुँ ओर हर क्षेत्र में, हर वस्तु की, हर पदार्थ की बढ़ती हुई कीमतों को देखकर आज हर प्राणी के मुख से बरबस निकल पड़ता है कि ज़माना कितना बदल गया है ! हर चीज़ कितनी महंगी हो गई है ! ! कीमतें आकाश को छूती जा रही हैं ! ! साधारण व्यक्ति का तो जीवन जीना, परिवार की आवश्यकताओं को पूर्ण करना ही कठिन तो क्या, असम्भव-सा हो गया है ! ! ! इस प्रकार की चर्चा आज कई बार अड़ोस-पड़ोस में, मित्रों में, सम्बन्धियों में आये दिन होती रहती है। आज की इस आर्थिक व्यवस्था की चर्चा में उपरोक्त वाक्यों के साथ-साथ बहुत बार यह वाक्य भी सुनने को मिलता है—"जी हाँ, अन्य सब वस्तुओं के दाम तो बढ़ गए हैं लेकिन मनुष्य की कीमत बहुत घट गई है ! और सब चीज़ें तो महंगी होती जा रही हैं पर मनुष्य जीवन सस्ता होता जा रहा है ! ! इस तरह के वार्तालाप करके सब अपने-अपने कार्य-व्यवहार में फिर से व्यस्त हो जाते हैं और अपनी ज़िन्दगी की गाड़ी घसीटते रहते हैं। शायद कभी किसी ने यह न सोचा होगा कि मनुष्य जिसे संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है, उसकी यह शोचनीय दशा क्योंकर हुई ? आखिर इसका कारण क्या है ? कहावत प्रसिद्ध है कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। (Without cause there is no effect) अतः इस नियम के अनुसार इस दशा का भी तो कोई कारण रहा होगा। लेकिन वह क्या कारण है ? और क्या उस कारण का कोई निवारण भी है ? और अगर है तो वह क्या है ? इस लेख में हम उसी की चर्चा करेंगे।

ज्ञान के सागर, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञाता, आत्माओं के ८४ जन्मों की कहानी को जानने वाले, बिगड़ी को बनाने वाले, पतित-पावन परमपिता परमात्मा ही हमें इन प्रश्नों के उत्तर देते हैं। संसार में अन्य कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो हमें इन प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर दे सके क्योंकि वे स्वयं ही इन प्रश्नों में उलझे हुए हैं। इस उलझन को केवल परमात्मा ही सुलझा सकते हैं।

कीमत कम क्यों हुई ?

शिव बाबा ने इस प्रश्न का उत्तर समझाने के लिए आत्मा की सोने से और शरीर की ज़ेवर से तुलना की है। जैसे हम सब यह जानते हैं कि जैसा सोना वैसा ज़ेवर होता है। सोना २४ कैरट शुद्ध है तो ज़ेवर भी शुद्ध होगा और उसकी कीमत बहुत अधिक होगी परन्तु सोने में अगर मिलावट होगी तो ज़ेवर की कीमत बहुत कम हो जाएगी। इसी प्रकार आत्मा रूपी सोना जब शुद्ध, पावन, सतोप्रधान, सर्व गुण सम्पन्न है तब शरीर रूपी ज़ेवर भी सतोप्रधान, जिसे कंचन काया कहा जाता है, होता है। जब आत्मा अशुद्ध, पतित और तमोप्रधान हो जाती है, तब शरीर रूपी ज़ेवर भी उसी अनुरूप होता है। अतः मनुष्य की कीमत घटने का कारण है कि आज मनुष्यात्माएँ तमोप्रधान, अवगुणी और विकारी हो चुकी हैं, इसलिए उनके शरीरों की भी कोई कीमत नहीं है। इसका प्रत्यक्ष सबूत हमें देवालयों में देवी-देवताओं की मूर्तियों को देखने पर मिलता है। देवी-देवताओं का जीवन पूर्ण पवित्र था, सम्पूर्ण निर्विकारी था, सर्व गुण सम्पन्न था, इसलिए उनके शरीरों की आज तक भक्तजन मूर्तियाँ बना-बना कर पूजा करते हैं। उनकी इतनी कद्र है, कीमत है कि छोटी-सी पत्थर की अथवा मिट्टी की मूर्ति के लिए भी मन्दिर बनाने के लिए भक्तजन अपना तन, मन और धन लगा

देते हैं और उधर जीते-जागते, कलियुगी प्राणियों का हाल देखो कि रहने के लिए ढंग का मकान भी नहीं (कइयों के पास तो सिर छुपाने की भी जगह नहीं)

कुछ महापुरुषों अथवा महानात्माओं, प्राचीन ऋषियों, मुनियों के उदाहरण लें तो भी यह बात स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने अपने को (आत्मा को) पवित्र बनाया, जीवन को श्रेष्ठ कर्मों में लगाया तो उनके (शरीर के) दर्शन के लिए, उनके चरणों की धूल लेने के लिए हजारों लोग उमड़ पड़ते थे और आज तक भी स्थान-स्थान पर उनकी यादगारें कायम हैं।

अतः सार यही है कि अपवित्रता ने ही मनुष्य की कीमत घटा दी है। उसका जीवन कितना असुरक्षित हो गया है। परन्तु अब प्रश्न यह है कि मानव-जीवन अमूल्य कैसे बने ?

जब मनुष्य जीवन कौड़ी-तुल्य हो जाता है तो उसे हीरे-तुल्य बनाने के लिए अथवा लोह-तुल्य (Iron Aged) को स्वर्ण-तुल्य (Golden Aged) बनाने के लिए पारसनाथ परमात्मा शिव को इस धरा पर आना होता है। वह परमात्मा शिव फिर से आये हैं मनुष्यात्माओं को सच्चा सोना बनाने के लिए। उसके लिए हमें वे कुछ सुझाव देते हैं, कुछ मर्यादाएँ बताते हैं, कुछ शिक्षाएँ देते हैं। अगर मानव उन शिक्षाओं को समझकर शिव पिता द्वारा बताई गई मर्यादाओं पर चले, उनकी आज्ञा का पालन करे तो आत्मा शीघ्र ही पावन बनती जाएगी और साथ-साथ उसकी कीमत बढ़ती जाएगी। यह हम अपने अनुभव से कहते हैं कि हमारा जीवन इसका प्रमाण है।

ईश्वरीय शिक्षाएँ

१. जिस प्रकार सोने का खोट निकालने के लिए उसे आग में डाला जाता है, इसी प्रकार आत्मा को शुद्ध, पवित्र बनाने के लिए उसे योगाग्नि में तपाओ। हर घण्टे में ५ मिनट भी उसे अवश्य याद करो।

२. प्रतिदिन ज्ञान श्रवण व ज्ञान चिन्तन करना अति आवश्यक है। शिव बाबा कहते हैं कि आप जो ज्ञान सुनते हैं और फिर उसका चिन्तन करते हैं, उसमें से स्व उन्नति के लिए कोई-न-कोई दृढ़ संकल्प अवश्य करो।

३. समय को पहचान, समय का मूल्य रखो। व्यर्थ संकल्पों, व्यर्थ वचनों व व्यर्थ कर्मों में समय न गंवाओ। जो समय की कीमत नहीं रखता, समय उसकी कीमत नहीं रखता।

४. आत्म-निरीक्षण कर अपने गुणों को सोचो, अन्य के गुण देखो व गुणों का ही वर्णन करो। गुण ही मनुष्य को महान बनाते हैं। और जो महान है, वह मूल्यवान है।

बड़ौदा म्युनसीपल कार्पोरेशन की ओर से दिल्ली-आबू-बेलगाम साइकल यात्रियों के सन्मान में आयोजित समारोह के पश्चात् चित्र में साइकल यात्रियों के साथ बैठी हैं ब्र० कु० डॉ० निरंजना, भीखा भाई, ब्र० कु० राजबहिन, ऊषा बहिन, ब्र० कु० नरेन्द्र भाई, ब्र० कु० मनुभाई और कार्पोरेशन के अधिकारीगण।

अनुकरण ब्रह्मा बाबा का

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

परमपिता शिव ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो सत्य व अति उच्च कोटि का ज्ञान दिया, सर्वप्रथम ब्रह्मा बाबा उसकी प्रतिमूर्त्ति बने। क्योंकि उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान के प्रत्येक रहस्य को अपने जीवन में साकार किया, इसलिए हम आत्माएँ यह नहीं कह सकतीं कि इतनी उच्च गहन धारणाओं को जीवन में नहीं अपनाया जा सकता। ब्रह्मा बाबा एक मनुष्य थे, परन्तु उन्होंने अपने त्याग तपस्या के बल से सर्वोच्च पद प्राप्त किया। इतना ही नहीं व्यवहार की दृष्टि से वे अति महान व प्रेरक बनकर रहे। यहाँ पर हम उनकी कुछ महानताओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे जिन्हें यदि हम भी अपने जीवन में उतारें तो हम भी उनकी ही तरह महान बन जाएँ।

वे अलौकिक पिता थे

वे थे तो मनुष्य, परन्तु परमात्मा ने उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा नाम दिया अर्थात मनुष्य सृष्टि के आदि पिता, उनके द्वारा ब्राह्मणों को अपना बच्चा बनाया। क्यों? क्योंकि उनकी सर्व के लिए एक पिता की तरह कल्याण की भावना थी, उनमें सभी के लिए अपने बच्चों की तरह आगे बढ़ाने की कामना थी। वे बाप थे—इसलिए अपने प्रत्येक बच्चे का हर तरह से पूर्ण ध्यान रखते थे। उन्होंने सर्व को पितृवत प्यार दिया। किसी एक दो को नहीं, सबको समान रूप से शुभ-भावनाओं का दान दिया। जैसे एक बाप के मन में अपने बच्चों के लिए अकल्याण की भावना नहीं होती, वैसे ही सबने उन्हें सब बच्चों के कल्याण की कामना में रत पाया। वे संकल्प से भी किसी का बुरा नहीं चाहते थे।

उन जैसा महान बनने के लिए हमें भी यही स्नेह व कल्याण की भावना सभी के लिए रखनी होगी। चाहे कोई हमसे कैसा भी व्यवहार करे परन्तु बदले में स्नेह व कल्याण की भावना हम में ब्रह्मा बाबा के ही दर्शन करायेगी।

उनकी दृष्टि सभी के लिए महान थी

चाहे कोई गरीब हो या साधारण, योग्य हो वा अयोग्य, शिक्षित हो या अशिक्षित, वे सभी को ऊँची नजर से देखते थे। कभी भी वे ये नहीं कहते सुने गए कि ये बच्चा—"कोई काम का नहीं।" वे कहते थे कि सभी ईश्वरीय सन्तान महान हैं, जिन्हें भगवान ने अपनाया है, उनसे महान भला कौन और हो सकता है। उनकी दृष्टि में सभी बच्चों के लिए बहुत रहम भी समाया होता था। तभी तो वे कहा करते थे कि बच्चे अपने को उतना महान नहीं समझते, जितनी महानता की दृष्टि से बाबा उन्हें देखते हैं। यही कारण है कि सभी बच्चे भी बाबा के प्यार में कुर्बान होने को तैयार रहते थे।

यही दृष्टि हम भी यदि दूसरों के लिए अपनायें, किसी को भी नीची दृष्टि से न देखें तो यही हमारी महानता इस सृष्टि पर हमारे अलौकिक पिता को प्रसिद्ध करेगी।

उनके बोल सभी के लिए वरदानी थे

उन्होंने अपनी मधुर वाणी से सभी के दिलों को जीत लिया था। हजारों आत्माओं में कोई भी ये शिकायत नहीं कर सकता था कि बाबा ने कभी उन्हें बुरा बोला था। उनके बोल में अमृत बरसता था, वे सुखदाई वाणी उच्चारते थे। उनकी मीठी शिक्षाएँ चुम्बकीय आकर्षण वाली थीं। अपने बोल द्वारा वे कमजोर आत्मा को भी प्रोत्साहित कर देते थे। कभी भी उन्होंने किसी को निराशा की

ओर बढ़ने नहीं दिया।

हम ब्रह्मा वत्स ब्रह्माकुमार कुमारी भी यदि उनका ही अनुकरण करें तो हमारे बोल भी शक्तिशाली व वरदानी बन जाएं। कटु वचन के विष के लेन-देन से मुक्त होकर हम मधुर अमृतमय हो जाएं और हमारा यह आदर्श व्यवहार ही सभी को साकार में प्रभु का साक्षात्कार कराये।

उनकी दृष्टि आत्मिक थी

कोई भी जब उनके समक्ष आता था, तो सर्वप्रथम वे उसे रूहानी दृष्टि देते थे। इसी कारण सभी उनके सम्मुख जाते ही रूहानियत का व अशरीरीपन का सहज ही अनुभव करते थे। जब से वे ब्रह्मा बने, उनकी दैहिक दृष्टि समाप्त होकर दिव्यता में बदल गई थी।

इसी प्रकार सारे दिन हमारे समक्ष भी अनेक मनुष्य आते हैं, उन्हें भी यदि हम आत्मिक दृष्टि से देखेंगे तो उनकी भी बुरी-भावनाएँ समाप्त हो जाएंगी, उन्हें एक अलौकिकसा खिचाव होगा। और वे भी प्रभु से अपना नाता जोड़ने की प्रेरणा ले सकेंगे।

वे क्षमावान थे

अनेक बार कई बच्चे गलती करके बाबा के सम्मुख आते थे। उस समय उनसे बाबा का व्यवहार सचमुच सर्व महान बनने की प्रेरणा देने वाला था। वे तनिक भी ये आभास नहीं होने देते थे कि वे उनसे असन्तुष्ट या नाराज हैं बल्कि उस आत्मा को यह आभास देते थे कि वह महान है, जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ, अब आगे बढ़ो। और जब कोई बाबा को अपनी गलती सुनाता था तो बाबा उसे पूर्णतया हल्का कर देते थे। मनुष्य भारी होकर उनके सामने आते थे और हल्के होकर खुशी से भरकर उड़ते हुए जाते थे।

यही धारणा हम सभी को भी सीखनी है। हम भी क्षमावान बनें। क्षमा करना ही महान आत्माओं की महानता है। क्षमा करके हम दूसरों को आगे बढ़ा सकते हैं, संगठन में स्नेह का वातावरण बना सकते हैं। दूसरे को क्षमा कर देना ही सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है।

वे ज्ञान के स्वरूप बनकर रहे

यदि कोई कहे कि सत्य ज्ञान क्या है तो उनका जीवन ही इसका उत्तर था। वे ज्ञान के स्वरूप थे। यही कारण था जिससे कि उनके बोल में बल था। उनकी वाणी में अद्वितीय प्रभाव था। इसका मुख्य-आधार था कि वे ज्ञान के गहन चिन्तन में डूबे रहते थे। ज्ञानसागर तो उनमें प्रवेश था ही, परन्तु ज्ञान को भी उन्होंने स्वयं में समा लिया था। जो वे कहते थे, कहने से पूर्व ही वे उसका स्वरूप थे।

इसी तरह बाप समान बनने के लिए हमें भी ज्ञान का स्वरूप बनना होगा, ज्ञान चिन्तन से स्वयं में ज्ञान का बल भरना होगा। तभी हम ईश्वरीय ज्ञान को समस्त संसार में प्रख्यात कर सकेंगे।

उनमें सागर की तरह समाने की शक्ति थी

जैसे लौकिक माँ-बाप अपने बच्चों की बुराईयों को सम्पूर्णतया समाकर रखते हैं, उसका कहीं वर्णन नहीं करते। ऐसे ही ये अलौकिक पिता भी अपने बच्चों की सभी ऊँच-नीच को अन्दर ही समा लेते थे, किसी से भी उसका वर्णन नहीं करते थे। वे सब बातों को यहाँ तक समा लेते थे कि व्यवहार में भी उन बच्चों को वही स्नेह व वही सम्पूर्ण शुभभावना अनुभव होती थी। सागर की तरह सब कुछ समाकर वे सदा अडोल चित देखे गये।

इसी प्रकार हम भी सीखें कि जो भी कुछ देखें व सुनें, उसे समा लें, यहाँ वहाँ वर्णन न करें। क्योंकि वर्णन से बातें बढ़ती हैं व वातावरण बिगड़ता है और संगठन की एकता छिन्न-भिन्न हो जाती है।

सभी को ऐसा लगता था कि बाबा हमारे हैं, मुझे ही वे सबसे अधिक प्यार करते हैं। लोग दौड़े-दौड़े उनके पास आते थे। उन्हें अपना समझकर अपना सच्चा मित्र व परम सहायक मानते थे।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

१८ जनवरी

ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

याद आती तेरी शिक्षाएँ वो मधुभरी ।
हर वर्ष जब आती १८ जनवरी ।।
देह का कलेवर दिया त्याग कूच किया इस जग से
जिनके हित अनगिन आँखों से प्रेम के मोती बरसे
उस दिन की याद दिलाती १८ जनवरी
नैनों में नेह-जल लाती १८ जनवरी
तुम मुक्त हुए तन बन्धन से छोड़ दिया साकारी फर्श
अव्यक्त रूप धारण किये हो गये सत्रह वर्ष
तेरी हर पल याद दिलाती १८ जनवरी
स्मृति स्वरूप बनाती १८ जनवरी
निमन्त्रण देकर बुला रहा कोई क्षितिज के उस पार से
'आओ बच्चे', 'मीठे बच्चे' कह रहा दुलार से
यही भासना लाती १८ जनवरी
नये अनुभव कराती १८ जनवरी
बन ज्ञान-चन्द्रमा भू पर अब भी शीतल किरणें बरसाते
नित मधुर-मधुर शिक्षाओं से हम बच्चों को सजाते
स्वयं की पहचान कराती १८ जनवरी
जीने का ढंग सिखाती १८ जनवरी
वो ज्ञान, शांति, शक्ति, पवित्रता के थे स्तम्भ
हमको भी फालोफादर करके बनना है बाप-सम
यही प्रेरणा लाती १८ जनवरी
सेवा का ताज पहनाती १८ जनवरी
'नष्टोमोहा-स्मृति लब्धा' का यह दिन पाठ पढ़ाए
जाना है घर धारण कर गीता के १८ अध्याय
यह शुभ संदेश सुनाती १८ जनवरी
सम्पूर्णता का पाठ पढ़ाती १८ जनवरी
आओ हम सब मिलकर भारत में स्वर्ग सजाएँ
उनके पदचिन्हों पर चल कर जीवन सफल बनाएं
सत्य राह दिखाती १८ जनवरी
नई चेतना लाती १८ जनवरी

गुण मूर्त्त बाबा ने हमें गुणवान बनाया

ब्र० कु० सन्तरी जी जो कि बाबा के भतीजे की युगल थीं, वे बाबा के साथ आरम्भ से साथ रहीं। आजकल वे कलकत्ता सेवाकेन्द्र पर सेवारत हैं। उनके उदगार उनके शब्दों में····· (सम्पादक)

सहनशीलता की शिक्षा

एक बार की बात है, मुझे कुछ बुखार आया तथा बाबा ने डाक्टर बोस को बुलाया। उसने मेरी नाड़ी तथा दर्द जानना चाहा। तथा ऐसे हाथ लगाते ही मुझे दर्द सा हुआ। मेरे मुख से आहा— ऐसे आवाज आई। बाबा ने सुन लिया। बाबा बोले बच्ची ये आह ! की आवाज तुम्हारी थी। क्या हुआ। मैं तो कमजोर और छोटी थी। मैंने कहा हां बाबा। बाबा बोले नहीं बच्ची दुःख में भी खुशी का आभास होना चाहिए। सहनशीलता का गुण सबसे बड़ा है।

विश्वास का गुण

इतने बड़े घर में उस समय हम सभी के खाने के बर्तन भी चांदी के थे। हीरे जवाहरत तो सब जगह थे। परन्तु किसी भी अलमारी में ताला नहीं लगता था। जब भी बाबा दुकान से ऊपर आते थे, ऐसे ही नौकरों के भरोसे सब छोड़कर आते थे। दरबान ही बन्द करते थे। इस प्रकार कभी चोरी भी नहीं देखी। बाबा सब पर विश्वास करते थे।

निस्संकल्प अवस्था

बाबा नौकरों पर जितना विश्वास करते थे, उतनी ही उनकी पालना करते थे। उसके परिवार की देखभाल करते थे। ताकि वो चोरी नहीं करें। तिजोरी में सब जेवर भरे रहते थे, लेकिन बाबा पूजा में निश्चिन्त होकर बैठता था। कोई भी संकल्प नहीं चलता था कि ये चोर है, या अलमारी खुली है। इस कारण बुद्धि हल्की रहती थी। टाइम (समय) ऐसे नहीं गंवाये। सेवा पूजा में ही समय बीते, बाह्य-मुखता में नहीं। चलना ऐसे सिखाया कि बाहर वालों की हम पर कुदृष्टि नहीं पड़े।

सेवा भावना

घर में तथा दुकान में सम्बन्धी व व्यापारी आते रहते थे। राजा हो या प्रजा, बाबा सभी की दिल से सेवा करते थे। तथा हमारे लायक सेवा हमसे कराते थे। सबको सौगात व प्यार से बातें करके खाना खिलाकर विदाई देते थे।

वैराग वृति व व्यापार छोड़ने का संकल्प— जो सोया वही पाया

बाबा का काका मूलचन्द से बहुत प्यार था। तथा बाबा कहते थे काका जब आप शरीर छोड़ेंगे तो मैं भी व्यापार छोड़ूंगा। तथा अपने हाथों से आपका अन्तिम क्रियाक्रम करूंगा। जैसा बाबा ने सोया था वैसे ही आखिर में हुआ।

एक दिन बाबा रात में चौपड़ खेल रहे थे। तथा बाबा का जो लौकिक पार्टनर (भागीदार) था उसे बाबा प्यार से भाऊ कहते थे। खेलते-खेलते बाबा को संकल्प आया कि छोड़ो तो छूटे। तो थोड़ी देर बाद हंसते हुए, कौड़ी फेंकते हुए बाबा बोले, भाऊ—देखो ! सोच चलता है कि इसको छोड़ दूं। भाऊ बोले किसको। बाबा बोले इस

धन्धे (व्यापार) को। सचमुच बोलता हूं। आप इसको सम्भालो। तो Partener (भाऊ) भी बड़ी-बड़ी चीज़ें मांगने लगे। मेरे को यह घर देंगे, बाबा कहे हां। मेरे को ये आलमारी देंगे (जिसमें सोने-चांदी के बर्तन व जेवर भरे हुए थे) बाबा बोले हां। मेरे को ये देंगे, वो देंगे। माना भाऊ मांगता जाये, बाबा हाँ हाँ करता जाये।

ऐसा सब चीज़ों को देने में हाँ हाँ करने पर भागीदार का सोच चला (विचार आया) दादा का दिमाग तो कहीं ठीक नहीं है ? तो रात में तो ऐसे ही बातें करते-करते सो गये। सवेरे होते ही भाऊ ने बाबा को कहा— पक्का है, पक्का है, ठीक है ? बाबा ने कहा हाँ।

फिर बाबा बोले—अच्छा, भाऊ, जो तुमने कहा है उसे कोर्ट में जाकर पक्का लिखा पढ़ी कर लें। इस प्रकार बात-बात में ही स्थूल व्यापार को छोड़कर बेहद ज्ञान रत्नों के व्यापार में लग गये।

फिर उसी दिन बाबा को तार मिला कि काका मूलचन्द ने शरीर छोड़ दिया है। **'बस, बाबा के अन्दर का जो दिल था वो भी पूरा हुआ'** कारण बाबा ने संकल्प लिया था कि काका शरीर छोड़ेंगे तो मैं व्यापार छोड़ दूंगा। अब बाबा सिंध के लिये रवाना हुए। जैसे ही कलकत्ता से इलाहाबाद संगम से बाबा गुजर रहे थे तो त्रिवेणी का संगम याद आया। कुछ मुसलमान बाबा के डिब्बे में आ गये थे। अचानक बाबा को साक्षातकार ट्रेन में बैठे-बैठे ही होने लगा। घुंघरु की आवाज व सतयुगी दृश्य, श्रीकृष्ण सब को दिखाई देने लगा। साक्षात्कार में ही बाबा ने त्रिवेणी नदी में काका के क्रियाक्रम का कार्य किया। इस प्रकार बाबा का सूक्ष्म संकल्प, साक्षात्कार में व साकार रूप में सम्पूर्ण हुआ।

इस प्रकार साक्षातकार का पार्ट भी बाबा का शुरू हुआ।

११वें गुरु ने बाबा के चरण पकड़े

एक बार ज्ञान के बाद बाबा दिल्ली में रूप ब्रदर्स (बाबा के बड़े भाई का दुकान) में गये हुए थे। बाबा का रोहतास वाला ११वां गुरु आया। तो बाबा को देखकर गुरु जी बोले—दादा, आप को तो भगवान मिल गया तथा उसी समय बाबा के चरणों पर गिर पड़ा तो बाबा को बड़ा आश्चर्य लगा कि कल जो मेरा गुरु था, आज वह कैसे चेले की तरह चरणों में गिर रहा है।

परखने की शक्ति

बाबा में परखने की शक्ति इतनी आ गई थी कि जो भी घर में जिस किसी संकल्प को लेकर आता था। बाबा उसको ऐसे पूछते थे, जैसे सब जानते हैं। उसको वही बात, राय व सौगात देकर संतुष्ट करके भेजते थे कि उसका संकल्प साकार होने पर आश्चर्य व खुशी से हमेशा बाप का गुण-गान करते रहते थे।

○

अनुकरण ब्रह्मा बाबा का (शेष पृष्ठ २२ का)

वे राजा की तरह उदार थे, वे व्यर्थ खर्च भी नहीं होने देते थे और यज्ञ की सम्भाल भी सम्पूर्णतया करते थे। वे सदा गुप्त रहते थे। अपना नाम मान करने के बजाय बच्चों का नाम करते थे। बाबा पुरुषार्थ में सदा गुप्त रहे।

इसी प्रकार कदम-कदम पर उन्होंने हमें जो कर्म करके दिखाये, जो शिक्षाएं दीं, जिस तरह विघ्नों से निडर रहना सिखाया, जिस तरह त्यागी व तपस्वी जीवन बनाकर दिखाया। उसका ही यदि हम हूबहु अनुकरण करेंगे तो हमें भी उन्हीं की तरह सम्पूर्ण फरिश्ता बनने में देर नहीं लगेगी और इस धरापर अवतरित परमपिता को हम प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

बाबा ने मुझे शान्त मूर्त्त तथा सरलता की मूर्ति बना दिया

ब्र० कु० शान्तामणि आबू

मेरा जन्म सन् १९२३ में हैदराबाद सिंध के एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। घर में विशेष भक्ति पूजा तथा गीता पाठ करने के लिए विशेष एक कमरा बनाया हुआ था जिसमें मैं प्रतिदिन पूजा-पाठ करती थी।

जब मेरी आयु १२ वर्ष की थी मैं ६वीं कक्षा में पढ़ती थी। उन दिनों मेरी माता जी अकसर जहाँ बाबा का मकान था वहाँ मेरे नाना का घर था वहां जाया करती थी। एक दिन बाबा की युगल यशोदा के निमन्त्रण पर मेरी माता जी बाबा के सत्संग में गई तो बाबा गीता का दूसरा अध्याय अर्थात आत्मा का पाठ पढ़ा रहे थे कि आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं। अगर कोई यह विनाशी शरीर भी छोड़ता है तो रोने-पीटने की दरकार नहीं क्योंकि आत्मा तो अमर अर्थात अविनाशी है। तत्पश्चात बाबा ने उसे सामने बैठाकर ओम की धुनी चालू की जिससे उसे अनुपम शान्ति की अनुभूति हुई। इसी कारण से उसकी सत्संग में जाने की रूची बढ़ गई। दूसरे दिन जब वह दोनों बहनों ध्यानी दादी और रोचां जो कि अपने पतियों की मृत्यु के कारण बहुत दुःखी रहती थीं को अपना अनुभव सुनाया और उन्हें भी बाबा के सत्संग में ले गई उन्हें भी शान्ति का अनुभव हुआ, रोना छूट गया, दुःख समाप्त हुआ जिससे परिवार के सदस्यों पर भी इस परिवर्तन का असर हुआ।

मम्मा का सत्संग में आगमन

इस परिवर्तन को देखकर मम्मा (राधे जो रोचां की लड़की थी) वह भी बाबा के सत्संग में जाने लगी। वहाँ के पवित्र वायुमंडल ने मम्मा के मन पर गहरा प्रभाव डाला। धीरे-धीरे मम्मा की रुचि बढ़ने लगी। बाद में मम्मा एक दिन अपनी छोटी बहन गोपी को भी वहाँ ले गई। तो सत्संग में सर्वप्रथम गोपी को श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ। वह नई चमत्कारिक बात माताजी ने मुझे सुनाई तो मैंने कहा कि मुझे भी वहाँ ले चलो।

मुझे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ

जब मुझे ज्ञान सुनाया गया और बाद में ओम को धुनी चालू की तो उसी समय मेरी बुद्धि रूपी रस्सी शिव बाबा ने खींची और मैं ध्यान में चली गई। मुझे सागर की लहरों में कमल फूल पर बाँसुरी बजाते हुए सुन्दर सा श्रीकृष्ण दिखाई दिया। मैं श्रीकृष्ण के समीप जाने लगी तो सेकंड में श्रीकृष्ण गायब हुआ। तो योग के साथ वियोग अर्थात प्रेम के साथ-साथ जुदाई के पश्चाताप से मेरी आँखों से अनवरत आँसू बहते रहे। थोड़े समय के बाद ही मैं इस साकारी दुनिया में वापस आ गई। दिल में यही आशा बनी रही कि कब मुझे दुबारा ऐसे मिलन का आनन्द प्राप्त होगा।

प्रति दिन मैं ज्ञान स्नान करने लगी

बाबा गीता का पाठ पढ़ा रहे थे। जैसे ही मैंने

अन्दर प्रवेश किया तो मुझे बाबा की जगह श्रीकृष्ण दिखाई दिया। मैंने सोचा कि चेतन में तो श्रीकृष्ण यहाँ बैठा हुआ है फिर मैं इतना शोक क्यों कर रही हूँ। उस दिन से ही मेरी लगन बढ़ती गई और निशिदिन स्कूल के बाद श्याम को बाबा के पास जाकर एक-एक ज्ञान का पाठ सीखती रही। बाबा कहते थे कि बच्ची जो आज तुम्हें सिखाया उसे कल लिखकर ले आना। तो मैं बड़ी दिलचस्पी से लिखकर ले जाती थी। उस समय बाबा हमें "मैं कौन हूँ" और इस बेहद ड्रामा का ज्ञान समझाते थे।

एक दिन बाबा ने मुझ चक्र का चित्र बताया। उसमें सबसे ऊपर देव लोक, बीच में साकार दुनिया और नीचे पाताल लोक दर्शाया था। तो मैंने बाबा को कहा बाबा मैं तो देवलोक में जाऊँगी, मैं तो श्रीकृष्ण के साथ रास खेलूँगी। तो बाबा ने कहा कि बच्ची देवलोक में जाने के लिए तुझे पवित्र बनना होगा, नहीं तो नर्क में जाना पड़ेगा। यह पढ़ाई लगातार ६ मास तक हम पढ़ते रहे।

बाद में बाबा अपने लौकिक परिवार सहित काश्मीर चले गए। बाबा जो रोज मुरली भेजते थे, वो मम्मा हमें सुनाती थी। मतलब बाबा के पीछे भी सत्संग जोरदार चलता रहा।

बाबा ने परमधाम का रास्ता बताया

उन्हीं दिनों में मेरे लौकिक पिताजी अपने मित्रों सहित श्रीलंका से अपने व्यापार से फारिग होकर काश्मीर घूमने गये थे। तीन दिन के बाद वो अकेले ही बाबा के बंगले के सामने से गुजर रहे थे। उन्हें पहलगाम जाना था। रास्ते में चलते-चलते बाबा के घर के कम्पाउन्ड में टहलते हुए—निर्मल-शान्ता बहन (बाबा की लौकिक बच्ची) को पिताजी ने देखा और उनसे पूछा कि पहलगाम का रास्ता कहां है? तो उसने जवाब दिया कि वो तो मैं नहीं जानती हूँ लेकिन परमधाम का रास्ता जरूर जानती हूँ। मेरे पिताजी ने समझा कि ये भी कोई देखने का स्थान होगा, तो पूछा कहां है उसका रास्ता? तो वो पिताजी को अन्दर ले गई। अन्दर बैठे हुए बाबा को कहा कि पिताजी यह भाई परमधाम का रास्ता पूछ रहा है, आप इन्हें बताएँ।

बाबा ने उन्हें देखते ही पूछा कि बेटा मैं तुम्हें तीन दिन से ढूंढ़ रहा हूँ, तुम कहाँ थे? और सचमुच उन्हें काश्मीर में आए तीन दिन ही हुए थे। पिताजी ने सोचा कि ये तो अन्तरयामी हैं, इन्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ तीन दिन से हूँ। बाबा को उनका चेहरा तीन दिन पहले ही स्वप्न में दिखाई दिया था। फिर बाबा ने उन्हें दृष्टि दी। बाबा की शक्तिशाली दृष्टि से पिताजी ने स्वयं को देह से न्यारा अनुभव किया और उन्हें हजारों सूर्य से तेजोमय-प्रकाश का साक्षात्कार हुआ। वह पिताजी सहन नहीं कर सके। उनके शरीर में बहुत गरमी आ गई थी। इतने तक कि पिताजी ने कमीज उतारने का प्रयत्न भी किया। तत्पश्चात बाबा ने उन्हें एक ठंडा ग्लास पानी भी पिलाया। जब वो वतन से नीचे आये तो ईश्वरीय नशे में चूर थे। उनकी आँखें बहुत लाल हो गई थीं। नशे को हल्का करने के लिए बाबा ने उन्हें कुछेक व्यवहारिक बातें पूछीं कि आप कौन हो, कहां से आये हो, क्या करते हो। किसके साथ आये थे और अब कहाँ जाना है?

प्रश्नों के जवाब सुनकर बाबा ने कहा कि हैदराबाद सिंध में आपका पूरा परिवार हमारे घर सत्संग करने आता है। आप भी जब वहाँ जाओ तो ज्ञान की सब बातें सत्संग में जाकर समझ लेना। पिताजी दो दिन के बाद जब हैदराबाद आए तो हमें सारा समाचार सुनाया और कहा कि मुझे भी सत्संग ले चलो। माताजी उन्हें सत्संग ले गईं। वहाँ एक बहन ने शरीर और आत्मा का ज्ञान दिया और नियम प्रमाण ओम की धुनी चालू की जिससे उन्हें दुबारा ईश्वरीय नशा चढ़ गया और वो ध्यान में चले गए। और उन्हें वैकुंठ का तथा अनेक देवी देवताओं का साक्षात्कार हुआ जिससे वो एक घंटा हँसते ही रहे। और जब दर्द-नाहक विनाश का साक्षात्कार हुआ तो एक घंटा

रोते ही रहे। इस तरह उन्हें लगातार एक सप्ताह में विभिन्न प्रकार की अनुभूतियाँ हुईं। माताजी ने जब देखा कि उन्हें नशा चढ़ता जा रहा है तो ज्ञान सुनाने वाली बहन को कहा कि आप इन्हें ज्ञान का डोज़ कम दो, जिससे इनका नशा कम हो जाए। बाद में शिव बाबा ने उन्हें प्रेरणा दी कि अभी तुम्हें नई दुनिया बनाने में सहयोगी बनना है। प्रेरणानुसार पिताजी ने अपना तन मन धन तथा समस्त परिवार भी बाबा के आगे समर्पित किया।

फिर तो उसके बाद बाबा ने हैदराबाद में अपने लौकिक परिवार निमित्त एक बड़ा बंगला बनाने का संकल्प किया। उसमें छोटे बच्चों के लिए स्कूल तथा होस्टल खोलने का बाबा का प्लॉन था। सत्संग में आने वाली माताओं को बाबा ने कहा कि ५ से १२ साल तक के बच्चों को बिना खर्च ऊसमें पढ़ाया जाएगा ताकि आगे चल वे ध्रुव और प्रह्लाद के समान बनकर अपनी बेहद इस सृष्टि को स्वर्ग समान सम्पूर्ण सुख शान्ति सम्पन्न बना सकें। माताओं ने राय करके अपने बच्चे तथा बच्चियों को उस विद्यालय में दाखिल किया। सबने सहर्ष अपने हस्तों से समर्पण पत्र लिखकर दिया।

बाबा ने मुझे टीचर बनाया

बाबा ने बच्चों के स्कूल में मुझे भूगोल, इतिहास व संगीत सिखाने का कार्य दिया। परन्तु जैसे-जैसे वहाँ पवित्रता के कारण सामाजिक विरोध बढ़ा तो पढ़ाई में विलम्ब होने लगा। एक वर्ष तक तो यह कार्य पूर्णतया-निर्विघ्न चला। तत्पश्चात ज्यादा विघ्नों को देखते हुए बाबा ने स्कूल को करांची में ले जाने की प्रेरणा दी। यद्यपि वहाँ पर कई विघ्न पड़े, परन्तु इसके बाद बच्चों की पढ़ाई नियमित रूप से चलती रही।

मेरा ध्यान का पार्ट खुला

इसके बाद मुझे बाबा से दिव्य दृष्टि का वरदान मिला और मैं भी दिव्य साक्षात्कार करने लगी। मुझे आत्मा के, परमात्मा के, स्वर्ग के, मूल वतन के कई बार साक्षात्कार हुए। इससे मेरा जीवन बहुत आनन्दित हो उठा। इन दिनों में मैं मम्मा के साथ रहती थी।

बाबा ने मुझे डबल खजांची बनाया

नियमित ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ने के कारण तथा आज्ञाकारी व वफ़ादार होने के कारण मुझसे बाबा बहुत प्रसन्न रहते थे। फलस्वरूप ईश्वरीय ज्ञान रत्नों के खज़ाने के साथ-साथ बाबा ने मुझे अपने धन को सम्भालने की भी जिम्मेदारी दी। इससे मुझे बाबा के अति समीप रहने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ और मैं बाबा से बहुत कुछ सीखती रही। और मुझे बाबा के स्नेह के कारण कई वरदान भी प्राप्त हुए। बाद में बाबा ने ईश्वरीय सेवार्थ मुझे बम्बई तथा लखनऊ भेजा था।

बाबा ने मुझे शान्ति की चेतन मूर्ति बनाया

बाबा के समीप रहने के कारण मैंने बाबा से अन्तर्मुखी शान्त चित्त होकर रहने की उच्च धारणा सीखी। पहले यह अभ्यास था परन्तु धीरे-धीरे मेरा जीवन ही शान्त मूर्त बन गया। ऐसे शान्त मूर्त होकर रहने से सेवाओं में भी अच्छी सफलता हुई और स्वयं के पुरुषार्थ में भी सरलता व सफलता अनुभव हुई। इस प्रकार बाबा ने जो मुझे "शान्तामणी" नाम दिया था, वह सार्थक सिद्ध हो गया।

इस तरह बाबा की छत्रछाया में जीवन की सुखद घड़ियों को व्यतीत करके ये प्रभु मिलन के ५० वर्ष व्यतीत हो गए। इस अलौकिक जीवन में अनेक अलौकिक अनुभव हुए, इस मंजिल पर चलते हुए अनेक बातों के अनुभव हुए परन्तु जीवन नैया का खिवैया सर्वशक्तिवान है इसलिए जीवन नैया विघ्नों की दीवारों को सहज ही पार करते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ती रही और अभी सदा यही उमंग रहती है कि बाबा के यज्ञ को सम्पन्न करते चलें, बाबा को प्रत्यक्ष करते चलें। बाबा ने हमें मधुबन शो केस में रक्खा है—हम आदर्श बनकर रहें। हमारे हर संकल्प, हर बोल व हर कर्म से दूसरों को बाबा के समीप ले जाएँ।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

दिल्ली-साउथ एक्सटेन्शन—सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि इन्डिया गेट के पास खान मार्केट पार्क में एक सप्ताह के लिए मिन्नी आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। इस मेले का उद्घाटन जस्टिल बेग जी द्वारा सम्पन्न हुआ। सावजनिक कायक्रम द्वारा अनेक सरकारी अधिकारियों की सेवा हुई। अनेक आत्मायें प्रतिदिन इस मेले को देखने आती रहीं। मेले के अन्तर्गत राजयोग शिविर के भी आयोजन किये गये जिससे अनेक आत्माओं ने अपने असली पिता का परिचय पाकर बहुत खुशी का अनुभव किया। मेले का मुख्य आकर्षण चैतन्य देवियों की झांकी थी जो प्रतिदिन शाम को सजाई जाती थी।

बम्बई गामदेवी—प्राप्त समाचार के अनुसार सिन्धी कम्युनिटी के प्रसिद्ध फिलासाफर श्री दादा जैसन और श्री राम पंजवानी को सिन्धी कानफ्रेन्स वा युनिवर्सल पीस कानफ्रेन्स में आने का निमन्त्रण दिया गया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। और अपनी शुभ कामनायें व्यक्त कीं। उन्हें ईश्वरीय साहित्य भेंट किया गया। यह भी समाचार मिला है कि भ्राता आस्पी जी के अथक परिश्रम से जब सब पदयात्रायें वा साइकिल यात्रा दिल्ली पहुँची तो तीन दिन में उनका तीन बार टेलीविजन पर समाचार दर्शाया गया। रेडियो पर एक इन्टरव्यू तथा दो बार समाचार आया। समाचार पत्रों में भी फोटो सहित समाचार प्रकाशित हुए। इसके अलावा पहली बार देहली से भेजा गया रेडियो फोटो बम्बई में प्रकाशित हुआ। रशियन टी० वी० और दूसरे देश वालों ने भी इन्टरव्यु लिया और फिल्म निकाली। भारत सरकार के फिल्म डिवीजन वालों ने भी तीनों दिन के कायक्रम की फिल्म निकाली जो भारत के सभी सिनेमाघरों में दिखाई जायेगी।

लखनऊ—खुरशीदबाग सेवाकेन्द्र की ओर से कार्तिक स्नान पर हजरत बेगम महल पार्क में आध्यात्मिक प्रदशनी का आयोजन किया गया जिसमें हजारों आत्माओं ने लाभ लिया। कई आत्मायें प्रदर्शनी देखने के पश्चात सेवाकेन्द्र पर साप्ताहिक कोर्स करने के लिए आईं। मलिहाबाद के प्रसिद्ध मन्दिर कोनेश्वर में भी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे अनेक आत्माओं ने देखा। वहाँ के गाँव के प्रधान, मुखिया और पुलिस अधिकारियों ने प्रदर्शनी देखकर बहुत ही प्रसन्नता व्यक्त की। सैकड़ों आत्माओं ने प्रतिज्ञा पत्र भी भरे।

दिल्ली—समाचार मिला है कि दिल्ली लारेन्स रोड पर एक नया सेवाकेन्द्र खुला है। जिसका उद्घाटन महानगर परिषद के सदस्य श्री श्यामलाल गर्ग और नगर निगम समिति के अध्यक्ष दीपचन्द बन्धू के द्वारा किया गया। जिसमें उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हम इस संस्था के कार्यों से अत्याधिक प्रभावित हैं। समय-समय पर हम इनसे लाभ प्राप्त करेंगे। करीब १ हजार आत्माओं ने इस अवसर पर लाभ लिया। संग्रहालय द्वारा भी कई आत्मायें ज्ञान योग का लाभ ले रही हैं।

जठलाना—समाचार मिला है—कार्तिक मास में पजी-खम्मा के ५ दिन शहर के मुख्य मार्गों से प्रभातफेरी निकाली गई। जिसका उद्घाटन २३ नवम्बर को सुबह ५ बजे सरपंच साहब द्वारा सम्पन्न हुआ। यह यात्रा प्रति-दिन ५ बजे से ९ बजे तक चलती थी। जिसमें लगभग ७० राजयोगी बहिने एवं भाई सम्मिलित होते थे। पांच दिन में करीब ५० स्थानों पर स्वागत कार्यक्रम हुए। नगर की हर मुख्य एरियासे यह यात्रायें निकाली गईं। २७ नवम्बर को मुख्य बाजार में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। जिसमें स्वामी भगवतानंद जी तथा सरपंच महोदय मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में बहिनों द्वारा चल रहे इस महान कार्य की सराहना करते हुए कहा कि मैंने इस विद्यालय के भाई बहिनों में जो युनिटी देखी है वह और कहीं नहीं देखी। इन भाई बहिनों

ने थोड़े ही दिनों में अपनी बहुत ही उन्नति की है। यह बहुत ही महान कार्य है। कार्यक्रम से शहर के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी लाभ लिया।

भीलवाड़ा—प्राप्त समाचार के अनुसार आजाद चौक पर आयोजित समारोह में बहिनों को प्रवचन करने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। ब्रह्माकुमारी राधा बहिन ने रामायण के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डाला। करीब २ हजार आत्माओं ने इस प्रवचन का लाभ लिया। इसके अलावा धनवन्तरी जयन्ती पर जिला आयुर्वेद चिकित्सालय की ओर से 'पर्यावरण प्रदूशन' विषय पर एक विचार गोष्ठी रखी गई जिसमें मुख्य अतिथी आयुर्वेद निदेशक राजस्थान अध्यक्ष भीलवाड़ा के अतिरिक्त जिलाधीश एवं प्रमुख वक्ता के रूप में ब्र० कु० बहिनों को आमन्त्रित किया गया। जिससे शहर के ५० प्रतिष्ठित व्यक्तियों को ईश्वरीय सन्देश मिला। इसी प्रकार तेरापंथी जैन समाज के द्वारा अनुव्रत आन्दोलन के जन्म मुनि श्री तुलसी के जन्म दिन को 'अहिंसा सार्वभौम दिवस' के रूप में मनाया गया जिसमें प्रमुख वक्ता के रूप में बहिनों को आमन्त्रित किया। सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि भी आमन्त्रित थे। बहिनों ने अहिंसा विषय को स्पष्ट किया। ४०० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। इन्द्रा गाँधी जी के जन्म दिन पर आदर्श उच्च प्राथमिक स्कूल से 'कौमी एकता' विषय पर प्रवचन करने का निमन्त्रण मिला। जिसमें बहिनों ने अपने विचार व्यक्त किये। सभी टीचर्स एवं ४०० बच्चों ने इस कार्यक्रम से लाभ लिया।

बुरहानपुर—समाचार मिला है कि नेपानगर में पेपर मिल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी उस प्रदर्शनी का उद्घाटन नेपानगर के मैनेजिंग डायरेक्टर बीयानी जी ने किया। उन्होंने प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात बहुत ही सराहना की इस जैसी प्रदर्शनी तो हर स्थान पर होनी चाहिए और हर व्यक्ति को देखकर जीवन में लाभ लेना चाहिए।

वहाँ हजारों भाई-बहनों ने प्रदर्शनी देखी और शिविर भी किया, इसके अलावा स्कूल व कालेजों में भी प्रोग्राम रखा गया।

फिरोजाबाद—ज्ञात हुआ है कि फिरोजाबाद से ५० किलो मीटर दूर कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बटेश्वर में जहाँ उ. प्र. का बहुत बड़ामेला लगता है जिसमें कि लाखों यात्री यमुना में स्नान कर शिव बाबा की यादगार बटेश्वर बाबा की प्रतिमा पर जल चढ़ाते हैं इस अवसर पर एक चार दिवसीय मानव जागृति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जो बहुत ही अच्छा रहा, हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया, परिचय पत्र और साहित्य द्वारा सेवा की गई।

लुधियाना—समाचार मिला है कि लुधियाना शहर में श्री जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी सभा द्वारा तुलसी जी के ७२ वें जन्मोत्सव को अहिंसा सार्वभौम दिवस के रूप में मनाया गया। इस प्रोग्राम में वक्ता के रूप में बड़े-बड़े विद्वान पधारे थे। इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों को भी वक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया था, इसमें बहनों ने बताया कि अहिंसा सार्वभौम की स्थिति में विश्व की रूप रेखा कैसी रहेगी। इस कार्यक्रम में लुधियाना के कुछ गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मोरबी—मोरबी सेवाकेन्द्र की ओर से गाला गाँव में प्रोजेक्टर शो का आयोजन किया गया था जिससे ५०० आत्माओं को परमात्मा का दिव्य सन्देश दिया गया। इसके अलावा मजुर माजी संघके आफिसर्स के स्नेह मिलन में ब्र० कु० बहनों का प्रवचन हुआ। लायन्स क्लब के मीटिंग में ब्र०कु०शारदा बहन का प्रवचन रखा गया था। इन प्रोग्रामों द्वारा अनेक आत्माओं को प्रभु का शुभ सन्देश प्राप्त हुआ।

कटनी—दो दिन के लिए नौ चैतन्य देवियों की झाँकी सजायी गयी। लगभग ७० हजार आत्माओं ने झाँकी देखी। देखने के पश्चात सराहना करते नहीं थकते थे स्थानीय विधायकों ने जब झाँकी देखी तो कहने लगे अभी तक तो कपड़े और लाइट के डेकोरेशन के दर्शन सब जगह हुए पर सच्ची देवियों का दर्शन आज हुआ। सभी स्थानीय समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित हुए। कई एसोसिएशन की ओर से शील्ड भी प्राप्त हुई।

गोवा—पणजी सेवाकेन्द्र की तरफ से वहाँ के महालक्ष्मी मन्दिर में दीपावली के शुभ अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन महालक्ष्मी कमेटी के अध्यक्ष भ्राता आंगले जी ने किया। यहाँ के सालेगाँव में भी प्रदर्शनी व प्रवचन करने का मौका

मिला। इस तरह हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

गोंदिया—सिविल लाइन महिला मंडल में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, इस प्रदर्शनी का उद्घाटन गोंदिया पुलिस विभाग के अधिकारी भ्राता शीन्दे साहब ने किया। आपने प्रदर्शनी देखकर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बहुत सराहना की। प्रदर्शनी के साथ योग शिविर का भी आयोजन किया गया। इस योग शिविर द्वारा अनेक मुख्य व्यक्तियों ने लाभ प्राप्त किया।

उदगीर—यहाँ पर पंचमसिंह भाई का आगमन हुआ। उनके आगमन पर हमने शहर के नगर पालिका मैदान के भव्य प्रांगण में एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रोग्राम में जिलाधिकारी भ्राता उमेशचंद्र जी पधारे और उदगीर के खासदार अरविन्द जी भी अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे पंचमसिह ने अपना डाकू जीवन का अनुभव 'क्रूरता से दिव्यता की ओर' इस विषय पर किया। इस कार्यक्रम में उदगीर के कलेक्टर, तहसीलदार व उनकी धर्मपत्नी, नगर पालिका के सदस्य, व्यापारी, कालेज के प्रोफेसर्स व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे थे। उसी दिन मराठवाड़ा पत्रकार संगठन की मीटिंग होने कारण ६ जिले के पत्रकार पधारे थे। सभी पत्रकार सेवाकेन्द्र पर पधारे। इस तरह उन्होंने भी अपने अखबारों में सभी समाचार छापे।

कटक—समाचार मिला है कि गाँव-गाँव की सेवा के लिए एक सुन्दर प्रोग्राम किया गया। केवझर शहर में एक विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके साथ ही साथ योग शिविर का भी आयोजन किया गया। इसके पश्चात् खुरदा टाउन में भी विश्व-नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, इस अवसर पर प्रोजेक्टर शो भी दिखाया गया। गाँव के लोगों ने इस प्रोग्राम से लाभ उठाया।

सांगली—ज्ञात हुआ है कि सांगली सेवाकेन्द्र के द्वारा बिटा शहर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगराध्यक्ष माननीय हणमतराव पाटिल के कर कमलों के द्वारा हुआ। नगराध्यक्ष ने विद्यालय के कार्य की प्रशंसा की और माऊंट आबू जाने की इच्छा व्यक्त की। प्रदर्शनी के साथ-साथ चैतन्य देवियों की झांकी भी दिखाई गयी तथा योग शिविर भी कराया गया। इन प्रोग्रामों द्वारा बहुत से लोगों ने लाभ लिया।

जगाधरी—समाचार मिला है कि जगाधरी से थोड़ी दूर पर कपाल मोचन तीर्थ स्थान जिसमें हर साल एक बहुत भारी मेला लगता है तो इस बार भी इस मेले में संकट मोचन आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई। यह प्रदर्शनी रात-दिन चलती रही। हजारों आत्माओं ने यह प्रदर्शनी देखी।

ऊंझा—समाचार मिला है कि ऊंझा और विसनगर में चैतन्य देवियों की झाँकी व प्रोटेक्टर शो और राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। झाँकी का उद्घाटन ऊंझा में भ्राता नाराण जी पटेल, प्रमुख ऊंझा नागरिक बैंक और विसनगर में भ्राता रमणीक लाल मणियार प्रमुख नगर पालिका विसनगर ने किया। इन प्रोग्रामों से वहाँ की मनुष्यात्माओं अत्यधिक लाभ प्राप्त किया।

चित्रकट धाम कर्वी—समाचार मिला है कि चित्रकूट धाम में एक विशाल मानस चरित सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में ब्र० कु० बहनों को भी आमन्त्रित किया गया। बहनों ने सम्मेलन में जाकर सभी आत्माओं को शिव बाबा का दिव्य परिचय सुनाया।

मधुबनी—सेवाकेन्द्र की ओर से झंझारपुर में दो दिवसीय प्रदर्शनी मारवाड़ी धर्मशाला में लगाई गयी जिससे बहुत-सी आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। दूसरे दिन प्रोजेक्टर शो तथा 'राजयोग' एवं 'आनन्द' फिल्म तथा बाबा की दिव्य फिल्म भी दिखलाई गयी जिसको देखकर सभी बहुत प्रभावित हुए।

हिसार—महाराजा अग्रसेन जयन्ती समारोह के अवसर पर अग्रोहा गांव में इस सेवाकेन्द्र को भी आमन्त्रित किया गया। तथा २ स्टाल प्रदर्शनी सेवा के लिए दिये गये। जिसमें ३००० व्यक्तियों ने लाभ प्राप्त किया। यहां के कर्मचारी भी बहुत प्रभावित हुए। इसके अलावा आदमपुर टाऊन में एक विश्व शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कविता

ब्र० कु० रोशन तिनसुकिया, असम

अनुभव होता हमको
ऐसा बार-बार है
अव्यक्त होते बाबा
फिर भी साकार है
अनुभव होता·····।
प्रम वही है, प्यार वही है
स्नेह वही है, दुलार वही है
मधुबन के कण-कण में
बसा तेरा प्यार है
अव्यक्त होते बाबा
फिर भी साकार है।
अनुभव होता·····।
जायें जिधर भी हम, दिखता उधर है
साकार बाबा, आता नजर है
दिव्य फरिश्तों का
यही संसार है
अव्यक्त होते बाबा
अनुभव होता·····।

(शेष पृष्ठ १ का)

o किसी भी बात में सूंझना नहीं सदा मौज में रहना है।

o रूहानियत की शक्ति द्वारा सर्व प्रकार के बन्धनों को समाप्त कर बुद्धि की लाइन क्लीयर रखनी है।

o पर-दृष्टि, परचिन्तन और परपंच को छोड़ स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

o रूहानी नशे की वृत्ति से खुशी का वायुमण्डल बनाने की सेवा करनी है।

o बच्चा बनो तो माया से बच जायेंगे। बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखना है।

o सर्विस में नवीनता वा सफलता के लिए पांच बातें याद रखनी हैं—एकता, स्वच्छता, महीनता, मधुरता और महानता।

o दूसरों के प्रति व्यर्थ भावनायें छोड़कर, सभी को शुभ भावनाओं का दान देना है।

o देह की आकर्षण को समाप्त करने के लिए विचित्र (आत्मा) और उसके चरित्र को देखने का अभ्यास करना है। सभी के प्रति आत्मिक भाव और अव्यक्ति भाव रखना है।

o अपनी एक्टिविटी को बदलने के लिए दिनचर्या में एक्यूरेट और एक्टिव रहो।

o स्वभाव को सरल बनाना है। सरलता ही स्वच्छता का आधार है।

o शरीर रूपी सांप को न देख आत्मा रूपी मणी को देखना है।

o नम्रचित और निःसंकल्प बनने के लिए स्वयं को निमित्त समझना है।

o जो मैं मैं करते हैं उनमें मगरूरी, मतभेद, मुरझाइश और मायूसी आ जाती है। अतः मैं पन को त्याग देना है।

o किसी भी बात का सामना करने के लिए कामनाओं को त्याग देना है।

o तीन बातें छोड़नी हैं—सेवा के लिए कहलाना २—बहाना देना ३—मुरझाना।

o स्वदर्शन चक्र की स्मृति से माया के व्यर्थ चक्करों को समाप्त कर देना है।

o असुरों के सामने काली रूप और ब्राह्मण कुल में शीतला रूप बनना है। अपनी शीतलता का प्रवाह दूसरों तक पहुंचाना है।

o स्वयं को परख कर परिवर्तन के लिए अभिमान और अलबेलापन त्याग देना है।

o शरीर का प्यार धोखेबाज है, जो पश्चाताप में लाता है, इससे न्यारे बनो तो विश्व के प्यारे बन जायेंगे।

o एकान्त प्रिय बनने के लिए अनेक से बुद्धियोग तोड़ एक का ही प्रिय बनना है।

o कर्मातीत बनने के लिए कथनी, करनी और रहनी तीनों समान बनानी है।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd No 10563/65-D, (E)—70